











ॐ३ / वे . कु . वि = उं =

विभुं रगमं उमुगमगमा॥५५॥ सैध

धूमत्रावगमं च उं रुवडिभक्तये, स

विभुपगमभुक्तिं देउडुडं मगनी॥५॥

मंभागववुदे उमुसैवभवसुगी सुगी॥

७२३॥ गववकुदि मरु

वी भद भयेडि यरुवाना॥५७॥ रि

वृवीडिक सभदत्र भकममृमृकिं

दि र, यदुरुकमभरु वी यमुडुय

यमुमुवा॥ १०॥ उमुवंमुउमिमुमि

दुडु वेरु विरुं वा॥ १०॥ = रि

॥ टपिमुवा॥

७९



निहैवमस्मिन्नुद्विदयमभवमिहं  
 उडमा॥ ५३॥ उक्तापिउडमद्विद्व  
 द्वाणमुयांभम, स्वानंकादमि  
 मुकुमविद्ववडिमायम॥ ५४॥ दि=

उदनेडिउमलेकैमनिहपृठिणी  
 यो, योगनिमंयमविद्वस्मिन्गट्टक  
 लवीशुडो॥ ५५॥ मुमुदीदमेधमक  
 र्णकद्वेउस्मिन्गट्टकः, उडमद्वम  
 गेधेगेविपृठिभपृकैरुके॥ ५६॥



36/ सि. स. कु. = कुं = ॥

विष्णुकलमलेकुं, दंडवद्धममृते,  
भक्तिकमले विष्णुः भुवद्धमपुण्यदि॥  
रुद्रावभोगेयै, पुमपुंय रणारुनभा॥  
उपुवयोगनिमृंभकगृहमृतिः॥  
विष्णुपुण्यदगेदनेद्रुलनयभा॥  
विमृमृगीरणामृती भुतिभंदाकदि  
लीमा॥ ५०॥ निमृरुगवंती विष्णु उलं  
उरुमः पुं॥ १०॥ वृद्धे वम॥ १०॥  
दं भु दंडमृण्डं दिवपकृणभग  
मिक॥



भण्डमस्तोत्रं, इणभरुमिक भि॥  
 भण्डमस्तोत्रं निहयानमुद विसेषः॥  
 इमेवमस्तु भविरीद्वेय एवगीपण,  
 उयैरुद विसेषः इयैरुद एवगी॥  
 इयैरुद लुटं विद्वमस्तुत्रं भवम्॥  
 विमपु मपिउ पदं भिउउप  
 फलने॥ १५॥ उयैरुद विसेषः  
 भविरीद्वेय एवगी, भद विमपुमदभ  
 यभद भे भदमस्तुत्रिः॥ १६॥ भद  
 भेदाय रुगवरी भद रू वी भ दे सुगी॥  
 भद उयैरुद भवमस्तुत्रं इय विसेषः॥  
 ८७७



(८०) / ५० - ५० - ५० -

मोपि निश्वसंतीः कसुं उभिदं माः॥  
विष्णुः मगी गूढ म भदभीमावपम॥

कगिडमुयडडमुं कसुं उं सक्तिम बुवेड॥  
मद्व भिडुं पूरुवै सुठ, म्मै डूविमं वडै॥

भेद यैडै मा ण्ड वसुं भपु कै ट ठै॥  
पूर्वै पंम र्गगडुभी नीयड भसुं लभु॥

वैण्णसुकि यडभपुड डुमडै भदभुं॥

रिड पिनुवम॥ ३१॥ एवं सुड डड रेवी

डगभी डड वेणम॥ ३२॥ विष्णुः पूरु

नडुय नि ड उं भपु कै ट ठै॥ रि=



८. / स - म - न - वि - उ - ॥

निकलग रिमदाग रिमैदाग रिमूदाग  
७, दंसीधुमेसुगी दं दं दं वक्रिणे ल  
(१३) रु७, लहूपधिमव उधिमं मत्रिः

रुत्रिगेवय॥ यमिनी मुलिनी धिग,  
मरिनी यकिणी इय॥ ३७॥ मरिनी

यपिनी व७ कृमभी परिष्प य७॥  
मैभूमैभुदाग मेव, मैभुहृ सुडिभुमी

यग यग ७ यग, दमेव यगमे सुगी॥

यस किमिहृ यिमुमु मर, मरु यि

लमिके॥ ३०॥ उभुभवसृयामकि॥

भ्रुदं किं भुयमेभय॥ ययद्वय॥

३९॥  
३७॥  
३८॥  
३९॥  
४०॥  
४१॥  
४२॥  
४३॥  
४४॥  
४५॥  
४६॥  
४७॥  
४८॥  
४९॥  
५०॥



नेशभृगभिकव दृ दृ म ये हृ भुवे  
 गमः॥३७॥ तिनभृम जेनडुं वृद्ध  
 ॐ, वृकुलान्नः॥ उतुमुं यल्लग्नव  
 भुय भुक्ते एनान्नः॥७०॥ एक  
 लवे दिमयनउडभृम म मे यडे,  
 भपकैर ठे मुगन्नवडिवीदपा  
 रुमे॥ ७०॥ क्लृण्णकृ क्लृ दतुं  
 वृद्धं ए त्रिडेहृमे॥ भभक्तयः  
 इभृहं यय प रगव दृ वि॥ ७१॥



पद्मवदमदभु<sup>१०</sup> वाङ्मय<sup>११</sup>  
 विक्रः॥ उवपुडिल्ले<sup>१२</sup> मने, मरुभ  
 य विमो<sup>१३</sup> छिडे॥ १३॥ श्रीरंगवन्तु<sup>१४</sup>  
 उऊवने<sup>१५</sup> वोभने<sup>१६</sup> वियड मिडि के मवम॥  
 १४॥ उवेडभ, उमे मयू<sup>१७</sup> मभवष्ट  
 वरुवपि॥ १५॥ किभटेनको<sup>१८</sup>  
 डूडवन्नि<sup>१९</sup> कडंभय॥ १६॥ टपिकुवा<sup>२०</sup>  
 १७॥ वड्डिड<sup>२१</sup> मिडिउरु मवमपे<sup>२२</sup> म  
 ये रणगडा॥ १८॥ विल्ले<sup>२३</sup> रुड<sup>२४</sup> रुंग  
 मिडे<sup>२५</sup> रणवकु<sup>२६</sup> मल्ले<sup>२७</sup> क<sup>२८</sup> म॥ हि=॥



८३/ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सुवंशजिनयदेवी मलिनैः परि

धृष्ट ॥ ००० ॥ ट पिकुवस ॥ ००० ॥ उ वेष्ट

कू ठगवः मङ्ग यरुगम कृष्ट ॥

कृष्ट यरुग विभिन्नैः सप्तनेमि

भीष्टयेः ॥ ००१ ॥ एवमेव मभुद्धन

वृद्ध ॥ मंभुष्टभुयमा ॥ पूठावमभु

मेवृभुक्तु यः मृष्ट वरुभिः ॥ ००३ ॥

उडिमीभक्तु यथा लभा वलिकै

भक्तु मेवीभक्तु भक्तु क ट ठ वणः ॥

पूषमः मरिष्टु ॥

सुरुमः भमा ॥

८३ / २. ३. १. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

रिडिडियवडिउमुविळ्ळु टपिःमळल  
क्री रंवर ३ छिळ्ळुः मकभुगी मडि  
मनावीरभा वयमुदभा वयवेर  
भुडिनवी मीमनाशीउवेडिडिय वडि  
प ० विडियेगः॥ मय ए नभा रिमु  
रिमुमुमुमुमुग रंयु क लिमं यं  
ण यु डि कं/ रं म डि म भिं  
यभ ए ल रं यं मुग रु ए नभा॥  
मुलेयमभमभने यरु प डी द मु  
वैवलथुं। मेवैमैरिभमिनी  
मिदभद लक्री मरे ए मिदभा॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

रिभमसुप्रि कठगवटै॥ ८५१८ वम॥ ०॥  
रिभवभगमकुट्टुं प्रलभवूमं  
पुगभदिपेभगभमठिपेभवनं  
८५१८॥ १॥ उरभगमदवीद  
रुवमैटं पगलिङ्गमा॥ रिद्वयभक  
लभववि, कुकुमदिपभगः॥ ३॥  
उरभगलिङ्गमवःपुमयेविंपु  
पडिमा॥ पुगभूटगडभुडयरेमगर  
कुपरे॥ ४॥ यववउंयैभुडभदि  
पभगभपिडिमा॥ रिमभकुषयभभुवे  
ठिठवविभुमा॥ ५॥

३

वि. वे. सु. ७, सुठम॥—

अदेच्छुगृति लेमुनं <sup>रि.</sup> अनसुवक <sup>म</sup> सु॥  
 अटपं य<sub>३</sub>पिकागमुयमेव पिडिथुडि॥  
 भुत त्रिगळडभवेते मेवग उडवि,  
 विमगत्रियक भट्टमदिषे <sup>२</sup> मरुद्रु॥  
 एउवक विडं भवम, भग विविमधिरुभा॥  
 मगं वः पूपत्रभे वणमुमुविमि वृडभा॥  
 अउं निमसु मेवानं वमं मिम पमुनः॥  
 यककिंय मभुसु हूकली कटिलाने <sup>९९</sup>॥  
 उडि केय पुलसु यकिने वरुन उडः॥  
 निमुरा मभउरे बुद्ध <sup>९०</sup> मः मङ्कगुस॥



८८

२०३० १०० ३० = २

अष्टमे यैव न वने मरुत्तरी न मगीतः॥

नितं भुमदुते ए भुमैतं भमगमुत्॥<sup>१००</sup>

अतीवते एभः कुतं दुलतु भिवपवत्त॥

रुदुमुमुभुगभुदुलवृपुमिगतुभ॥<sup>१०१</sup>

अतलं उदुते एभुवमेव मगी एभ॥

एकमुं उदु कुङ्गी वृपुलेक इयं द्वि॥<sup>१०३</sup>

यम रुमु भुवते एभुन एयउतु मगी॥

युभुन मरु वके माव देवे विपुते एभ॥<sup>१०५</sup>

मेभुन भुन येदुभं भपृभैतु मरु वत्त॥

वकुलेन मरु एभुते नितभुमु ए मरुवः॥<sup>१०५</sup>

बुद्ध ॥ मुद्रासु ॥ ३३ ॥ ३३ ॥  
 उरुस ॥ वसुने ॥ कानु ॥ लुके ॥  
 ३ ॥ सनसिक ॥ ०० ॥ उष्टुमुमु  
 भुमु ॥ वैरुपुष्टु ॥ उरुस ॥ नय  
 रिउयं ॥ ३३ ॥ उरुपुष्टु ॥ उरुस ॥  
 बुवेय ॥ भुष्टुये ॥ उरुपुष्टु ॥  
 लुष्टु ॥ ३३ ॥ उरुपुष्टु ॥ उरुस ॥  
 भुष्टु ॥ उरुपुष्टु ॥ उरुस ॥  
 उरुपुष्टु ॥ उरुपुष्टु ॥ उरुस ॥  
 उरुपुष्टु ॥ उरुपुष्टु ॥ उरुस ॥  
 उरुपुष्टु ॥ उरुपुष्टु ॥ उरुस ॥



[illegible]

भमभुंभकुपेपुनि<sup>६</sup> एगमी निव काः॥  
 कालमूरु उवा<sup>७५</sup> कुरुं उमै यमय निमलभा॥  
 कीरि सुभलं दग्गम, एग य उ वाभुग ॥  
 उरु भलिं उवा निवुं कुरु ल कटा क निमा॥<sup>७५</sup>  
 मरु मं उवाभुं कयग मवव दधु॥<sup>७५</sup>  
 उयगे विमले उरु मू वे य कभर उभमा॥  
 मरु ली यकग नि, भमभुभुम ली यु॥<sup>७५</sup>  
 विमुकमरु री उमै, पां मुं य नि निमलभा॥  
 मरु उ, ने कडुप नि उवा रु रुं यं भमा॥



कर्मभेदादुक्तमेवादी मुक्तान्नपि कु  
 ण। भगवन्भगवत्पु म, ठिल धाम्  
 उच्यते। ५०॥ लेखद्वयक गयनने  
 उक्तिं न पश्यति, उच्यते भगवत्पु मे  
 दगते विधितः॥ ५१॥ भगवन्भग  
 पुठवेन संभग मुक्ति क वि ॥ ५२॥ उच्यते  
 विभक्तकद्वे यैग निम्न एव दत्तः॥ ५३॥  
 भगवन्भगवत्पु य उच्यते संभेदः  
 एव दत्तः। ५४॥ विभक्तमपि यैग निम्न  
 उच्यते विभक्तः॥ ५५॥ वल्लभः कृष्णः  
 य भगवन्भगवत्पु य मुक्तिः॥ उच्यते विभक्तः

[illegible]



कर्मभेदादुक्तं मे दक्षी सुभाननपि सु  
 ७। भगवन्भगवन्वृत्त्यु म, ठिल धाम्  
 उक्तु ३। ५०॥ लेखद्वयक गयनने  
 उक्तिं न पमृति, उक्ता पि भगवन्वृत्ते मे  
 दगते विपदिताः॥ १३॥ भगवन्वृत्त्यु  
 पूरुवेन संभगमि ३। ३। ३। ३। ३। ३।  
 विभक्त्यकदे यैगतिम् एगदो॥ १३॥  
 भगवन्वृत्त्यु दगमे यत्तय संभेदो  
 एगदो। ३। ३। ३। ३। ३। ३।  
 उगवतीति भ॥ १३॥ वलाम्बु पुमेद  
 य भगवन्वृत्त्यु यमु ३। ३। ३। ३। ३। ३।

ममभुम्भेकुपेयुनि एगमी निव काः॥  
 कालसुमत्रुवात्तुं उमै यमय निमलभा॥  
 कीर्ति सुभले दाम्भरणे य उ वाभुगे ॥  
 उरु मणि उवा निवृत्तुं कुरु ले कटा कनिम ॥  
 अरु मं उवाभुं कयग मव व द्रुयु ॥  
 उ युगे विमले उरु मू वे य कभनु उ मभा ॥  
 मरु ली यकग नि ममभुभुमली युम ॥  
 विमकमरु मू उमै, पाभुं य नि निमलभा ॥  
 मभुं उ, ने कडुप नि उवा रु हुं य मं मभा ॥



कर्मभेदादुक्तं मे दक्षी सुभान्नपि कु  
 ण। भगवन्भगवत्पु स, ठिल पामु  
 उक्तुः। ५०॥ लेखद्वयक गयनने  
 उक्तिं पमृमि। उक्ता पि भगवत्ते मे  
 दगते नियतिः॥ ५१॥ भगवन् य  
 पूरुवेन संभा मुक्ति क वि॥ उक्तु  
 विभयक ह वै गतिम् एगदो॥ ५२॥  
 भगवन् यदगमै पाउय संभेदो  
 एगदो। नित्यमपि चेतं मि रेवी  
 उगवती दित॥ ५३॥ वलाम्बु पुमेद  
 य भगवन् ययमुक्ति॥ उक्ता विभु एगदो

ममभुम्भुयेयुनि<sup>६</sup> एगमी त्रिव कः॥  
 कालमूरुतवात्तुं<sup>६३६</sup> उमै यमय निमलभा॥  
 कीर्ति सुभले दग्ग, एग य उ वाभुगे॥  
 उरु मणिं उय मिवुं<sup>६३५</sup> कुरु ले कटा कनि॥  
 अरु मं उयामुं कयग मवव दधु॥  
 उयगे विमले उरु मू वेय कभर उ मभा॥  
 मरु ली यकग नि, ममभुभुली युम॥  
 विमुकमरु उमै, यामुं उ निमलभा॥  
 मरु उ, ने कडुप नि उय रुं यं मभा॥



३१ / इ. ल. रि = उं = जं.

रि मृगी मपुम डिक म ल मरु मरु  
य ट पिः म द क ली म द ल मृगी म द म  
मृगी म वर म न पु धु नः रि डी ली वी रं  
र म मृ यै म रिः वि मृ की ल कं म उ वि  
प पु र म उ म मृ मृ म पु म डिक प र वि  
वि यो गः ॥ प्र स म म रि मृ वृ द्वा ट पिः म द क  
ली म वर गाय रं मु नः म न रु म रिः र्क  
म रि क वी र म म अ रि मृ डं ट वृ मृ मृ  
मयी म द क ली श्री य प्र स म म रि मृ  
वि वि यो गः ॥ रि वी र मृ य य वि मृ दे मृ  
प न य नी म दि उ नः म रिः प्र म म य र ॥





ॐ३३/ सं. ३०. दि =

सिरीराइययविमूलेउडूणनयतीभकिउत्रः

मक्तिपूरेमयाउ। ३॥

मीभकुमुयउयाममीसिमक्ति कयैनमः॥

सिपूवभाष्टेनगकुचरुनेनपूभण्टयागवा॥

सिपयमेनकुडिउगयमि॥

सिमावलिःमुदउनेयेभनःकष्टुडधूमः॥

जिमभयउमुदुडिंविभुगकुमुडेभम॥ ०॥

मदमायउरुवेनयवभनउगपिपः॥ भव

कुवभफठगभावलिभुगयेगवः॥ १॥

भुगेमियेउगपुवंयेइवेमभभुमुवः॥ भु

वेनभाएकुडुभमुक्तिडिभकुले॥ ३॥

३ मृपालयउभभुकुएकुइरविवोभन॥

३३ / ३३ - ३ = ३०

विवृषः मइवमुसृकैल विपुं भिन  
मुस॥ ८॥ उभृगवदुमुभडिभुवलरु  
भिनः॥ उभृगपिमडिमुकैल विपुं भि  
ठिल्लिः॥ १॥ उः भुभभयोडेभिल्ल  
रु मणियेठवड॥ उभृगवदुमुभडिभुवलरु  
मुभलभिल्लिः॥ २॥ उभृगवदुमुभडिभुवलरु  
मुभलभिल्लिः॥ ३॥ उभृगवदुमुभडिभुवलरु  
उभृगवदुमुभडिभुवलरु॥ ४॥ उभृगवदुमुभडिभुवलरु  
उभृगवदुमुभडिभुवलरु॥ ५॥ उभृगवदुमुभडिभुवलरु  
उभृगवदुमुभडिभुवलरु॥ ६॥ उभृगवदुमुभडिभुवलरु  
उभृगवदुमुभडिभुवलरु॥ ७॥ उभृगवदुमुभडिभुवलरु  
उभृगवदुमुभडिभुवलरु॥ ८॥ उभृगवदुमुभडिभुवलरु  
उभृगवदुमुभडिभुवलरु॥ ९॥ उभृगवदुमुभडिभुवलरु  
उभृगवदुमुभडिभुवलरु॥ १०॥ उभृगवदुमुभडिभुवलरु



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 भगवत्पदं ध्यात्वा भक्त्या नमस्कृत्य  
 उवाच ॥ २ ॥  
 यत्किञ्चिद्भक्त्या नमस्कृत्य भगवत्पदं  
 ध्यात्वा भक्त्या नमस्कृत्य ॥ ३ ॥  
 भगवत्पदं ध्यात्वा भक्त्या नमस्कृत्य  
 उवाच ॥ ४ ॥  
 भगवत्पदं ध्यात्वा भक्त्या नमस्कृत्य  
 उवाच ॥ ५ ॥  
 भगवत्पदं ध्यात्वा भक्त्या नमस्कृत्य  
 उवाच ॥ ६ ॥  
 भगवत्पदं ध्यात्वा भक्त्या नमस्कृत्य  
 उवाच ॥ ७ ॥  
 भगवत्पदं ध्यात्वा भक्त्या नमस्कृत्य  
 उवाच ॥ ८ ॥  
 भगवत्पदं ध्यात्वा भक्त्या नमस्कृत्य  
 उवाच ॥ ९ ॥  
 भगवत्पदं ध्यात्वा भक्त्या नमस्कृत्य  
 उवाच ॥ १० ॥

७५

वे. कु. वि. = उ० =

सि सगवडिं पूवंडेह ऊ ववृटमदी ऊरणा॥  
ममभृयमुलै मुः ऊव मि भूडं वृयभा॥  
मनिमुः मे डि रुः यिरक्तयं के मंगमि  
हृडि॥ एडमृटमुभडं मिनुयममयजि  
वः॥ ०५॥ उड विपुमृमृ मवै मृमेकं रु  
रु मेमः॥ मय भुमेकभूंरु दे उमुगम  
नेरकः॥ ममेक उ वकभूडं रुमन उव  
लकमे॥ उह कल्लवममुमुटपडः पूम  
वैमिडभा॥ ०२॥ भूदव वमभडं वै मृः ।  
भूमकावनडे ययभा॥ ०३॥ वै मृ वमः  
(०१)



मम पित्र भवै मुद भवै न नि नं कुल ॥ (९०)

पदैरुगै विगुमु नलैरु रसामुतिः ॥

विदी नमु नैरुगै पदैरु रसामुतिः ॥ (९१)

वनभृगुगैरुः यी विगुमु पुवकुतिः ॥

मे दं न वि मि पुदं कुमल कुमल

द्विकम ॥ ९२ ॥ पूव डिं मुद नं यर

गं यरु मं भिः ॥ किं नं यं गद

कुम भक्त सभुदं पूदमा ॥ ९३ ॥ क

वैद किं न भक्त उरु व उ किं न

भे भुदः ॥ ९४ ॥ गलैक य ॥ ९५ ॥

२५१ / ५ - ३ - ३ - १

वैश्वदेवैरुवंल्लवैः परमाग्निरिह कृतेः॥

उष किं रुवाः अदभन वप्र डिभन सभा॥

वैश्वदेवैः॥ १३॥ एवमेतदृषा पूज, १३०

रुवान्, अमृते वयः॥ १७॥ किं को मि

न वप्र डिभन नि युगं भनः॥ यैश्च तृष्ट

पिष्टुं कं णलवैः विगृह्यः॥ ३०॥ य डि

सु एतदा वं य द विडे शुवमेभनः॥

किमेतद्वारिण भिरणत्रपि एत

उपि भदभने॥ ३०॥ यैश्च पूव नं मिडे

विशुक्लं धुपि वक्त्रं॥ उपं कृते भनि सुभे

एभन भुंयस्व यडे॥ ३१॥



३५)

ॐ - ॐ - ॐ =

कोमि किं यत्र मनसुषु, श्री उषु, निषु  
भा ॥ ३३ ॥ भक्त भुव उवाच ॥ ३३ ॥

मदि ते विभूतं भविं भभय भुवि ॥ ३४ ॥

मम भिन्न भवैर्मुक्तै मय प भुवि म उतः ॥

नृठ उते यद्यत्र यं यत्र दं तेन संवि

रुभा ॥ ३५ ॥ उप विष्णु कथं कश्चिन्मु

रा उ वैष्टु प भुवि ॥ ३६ ॥ ग रं उवाच ॥ ३३ ॥

रुग व भुव, दं पूषु भिन्नु भुव कं वरु

रुग ॥ ३७ ॥ नः ययैय न्न मन भभुवि

ऊरु उरु विर ॥ भभट्टग उरु रणभु

रुग ॥ ३८ ॥ पि ले य पि ॥ ८० ॥ ३





१२ / ॐ - ह्रि - ॐ = ॐ = ॐ =

वि विषयसुमदा रा य त्रिवे ५ ६  
सूचक ॥ शिवः पू णिनः केशि  
इव नु मुखयोग ॥ ८२ ॥ मृदके मि शिव  
गुणे पू णिन मुल्लुपूयः ॥ ८३ ॥ नि  
भरणभट्ट किउतन दि केवलभा ॥ ८४ ॥  
यउ दि ८८ निन भवेपमु पकि ८ ग  
यः ॥ ८९ ॥ नन ८८ नृ ८ यउयं ८ ग  
कि ८ भा ॥ ९० ॥ भनृ ८ यउयं  
३ लभनृउये ८ ये ॥ ९१ ॥ नि ८ मि  
५ मृदय ८ ग शिवमा ८ युः ॥ ५० ॥

क० मेका मु० मे दादी सु० न० न० पिकु  
 ण० भ० व० भ० व० वृ० पू० म० ठि० ल० ध० भु०  
 उ० दू० डि० ५०॥ ले० रु० दू० दू० क० ग० य० न०  
 उ० किं० न० प० मृ० सि० उ० ख० पि० भ० म० उ० व० उ० मे०  
 द० ग० उ० नि० य० डि० उ० ॥ १३॥ भ० द० भ० य०  
 पू० रु० वे० न० सं० भ० ग० भु० डि० क० डि० ॥ ७॥ उ० न० उ०  
 वि० भ० य० क० दे० ये० ग० नि० मृ० र० ग० द० ॥ ४॥  
 भ० उ० भ० य० द० ग० मृ० य० उ० य० सं० भे० द०  
 र० ग० उ० ॥ १॥ नि० न० भ० पि० ये० रं० मि० रे० वी०  
 उ० ग० व० री० दि० भ० ॥ ४॥ व० ल० म० क० धृ० भे० द०  
 य० भ० द० भ० य० पू० य० मु० डि० ॥ उ० य० वि० भु० र०



ॐ सं ॐ = ॐ = <sup>ममनवमगति</sup>

ममनवमगति ॥ ॐ ॥ ॐ ॥  
ममनवमगति ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥  
<sup>वधं ॐ ॐ ॐ ॐ</sup>

ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

कर्ममेका मुद्रा मे दद्यात् सुभक्तनपि सु  
 ण, भक्तभक्तवृत्तं स, ठिल धाम्  
 उद्दिष्टि ॥ ५० ॥ लेख्यं दुष्टक गयनं  
 उक्तिं न पृथुति, उक्तं पि भक्तवत्तं मे  
 दगत्तं विपदिताः ॥ ५१ ॥ भक्तभक्त  
 पूरुवेन संभक्तं मुद्रिकं वि ॥ ५२ ॥ उद्दिष्टं  
 विभक्त्यकं द्यै यैगतिम् एगदो ॥ ५३ ॥  
 भक्तभक्त्या दग्मै पाठ्य संभेदो  
 एगदो ॥ ५४ ॥ विभक्तं पि यैगं मिस्वी  
 उगवती द्दिष्ट ॥ ५५ ॥ वल्लभं कृपुमेद  
 य भक्तभक्त्युयमुद्रि ॥ ५६ ॥ उक्तं विभक्त्युय



६० / ३० - ७० ३० - - -

मधुपकुरंभालं मिश्रं प० ॥१३॥

नमः स्तुतं मुमुक्षुं पदं मा ३ मे

रुतमा ॥ दिभवा नृ दने भिं दं द्रविवि

विष्णुमि ॥१४॥ ममवमुष्टं मय पन

पदं पन ॥१५॥ मेधमसवनागे मे भ

कम ॥ विष्णु मिमा ॥ ३० ॥ नगद

३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥

मष्टं ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥

मष्टं ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥

३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥

३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥

१३/३३. हि

इवंगकरं रे की, लयती

थथ न मिनी ॥ गुरु मे <sup>पुत्र (म)</sup>भव

गाइ, कृत्त कृत्त यद

गि ॥ ५० मे कं न गप्पु

यमी मु कुरु भ, नः ॥ क

वमेन वउं (मि), यइयइ दि

गमु ॥ ३३ ॥ उइउइ कुल छु ॥

विशयः सत्त क भिकः ॥



३०/ २० - १२ -

लौं भायवैवै धरु ॥ १२

रुमभुयै कवयय दुर्भा

विमु नैरुययवै धरु ॥

१२ इं लौं रुमभुयै विमु

मभुयय धरु ॥ १२ नमः मि

गमि, इं नमः कल नै ॥

लौं नमै कभ नै, रु नै

रुमभुयय कल ॥ रु नमै कभ

कल ॥

$$\frac{1}{2} \cdot \frac{1}{2} \cdot \frac{1}{2} =$$

ॐ नमो रूपाय ॥ नमः ॥ ये नमो  
 वामनाभाय ॥ विं नमो भूय ॥  
 ये नमो गुरु ॥ पूज्यमः ॥ सु  
 ॐ पुण्ड्रिकभूतनाम  
 गैदाहम, पूवंग वृषकंकु  
 रूपा ॥ विं नमः ॥ ए नमि ॥ वि  
 ॥ यमुं ॥ रूपाय पुनः ययति  
 ॥ पुनः कुमुदीभिः ॥ सन्  
 सन् ॥ ॐ कौमुदीयनं भव  
 नकुप वरुमा ॥



सि व भ सु सु पि उ द न क भ ल र  
 द उ भ पं कै रं, नी ल म्भ सु डि  
 भ भृ प र र म कं से वे भ द क

लिक भ ॥ सि म्भ भृ कृ ग मु ग रं

ऊ लि मं थ म्भ नः ऊ लि कं ॥ रं

म डि भ भिं म्भ म्भ ल रं य ह

भ ग र र न म्भ ॥ मु लं थ म्भ म्भ न

च र गं डी द चै पू व ल पू ठं ॥ से वे से

रि रु म्भ नि नी भि द भ द न्नी भ ग र

भृ म्भ ॥

विष्णु मुल दल तिमरु भुमले च  
 रंण भयकं, दमुक्तेरुणी यनतु  
 विलस स्त्रीं मु उ लृष्टम ॥ गेमीरु  
 द भभसुवं दिरण्ड भण्डुं भद ॥  
 प्रव भद्रसा भुडी भवक रं भुभुदि रं ह  
 द्वितीया ॥ अथ नायक्ये ॥ तीरण्ड यवि  
 रुदे उरु णायणी भदि उत्रः मक्तिः पूये  
 रु वडा ॥ ३॥ अथ भुलं ॥ रि द्वी लंती य  
 भुभु वै विमु ॥ ००३॥ प्रव वदु यमः  
 दधुदि • का • व रु रु • ऊदग ॥ गुदी  
 उद्य नभा ॥



६/ ३-३-७० रि = =

अपुनपकुरंभालं निगृह्य प० ॥१३॥  
नरुल्लुलठिमुमुपकुरंभालं ॥ मे  
रुनम॥ दिमव नु द नं सिं दं र्दनिवि  
विण निम॥१७॥ र्दवमुटंभाय पन  
परंणक ॥१८॥ मेधमुभवनागे मेभ  
कम ॥ विकु पिडा॥ ३०॥ नगद  
रंरुलेउमु णुयः पू विवी भिभम॥  
मृट्टु ॥ भौ रूवी कुपल्लु य णुय ॥ ३१  
मभ्र निडा न रं मु भ्र मु द सं भ्र मु  
दुः ॥ उमु न रं न यो ॥ लुड्डु ॥ ३२  
उं नरुः ॥ ३३॥

२९/ ३०. ३०. ३०. ३०. ३०. ३०. ३०. ३०. ३०. ३०.

मम यत् निभदत्तं पुत्रि मवै भदत्तं कुत्र॥  
यत्तु मम कलाम्बु लेकं मम मम  
मम मम ॥ ३३ ॥ यत्तु लवमणं  
लवम कलाम्बु मदीयः ॥ यत्तु  
यत्तु मम वसुप्रयः मम दव दव  
मम ॥ ३४ ॥ यत्तु वः मम यत्तु नं रुद्रि  
मम मम यत्तु ॥ यत्तु मम मम मम यत्तु  
लेकं मम यत्तु ॥ ३५ ॥ मम मम यत्तु  
मम मम मम यत्तु ॥ यत्तु मम  
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु ॥ ३६ ॥



मरुण्वडंमबुभमधैगुगुवडः॥<sup>६३१</sup>  
 मरुममडंमवीवृपुलेकइयंदिध॥<sup>६३२</sup>  
 पामरुवृनडकुवंकिगीटंल्लिपि  
 उभुगभा॥<sup>६३३</sup> कैंठिडमयपडलं०  
 उरुनिभुनेनम॥ ३३॥ मिमैकुएभ  
 दमु॥ मभउगुपृमंभ्रिडभा॥ ३३:५  
 ववडयुंउयमैवृभगदिधभा॥<sup>६३९</sup>  
 मभुभुंउकणभुंउ,मीपडमिगड  
 गभा॥ मदिधभुभेननीमिक्क,६-  
 मभदभा॥ ८०॥ =

ययुण्यसामुष्टैसुवगुलत्रिः॥

गवामभयउष्टैसुवगुलत्रिः॥

भग॥ ८०॥ अययुष्टैसुवगुलत्रिः॥

भगदत्रः॥ पादुमसुवगुलत्रिः॥

गमिलेभमदभगः॥ ८१॥ अययुष्टैसुवगुलत्रिः॥

भगदत्रः॥ पादुमसुवगुलत्रिः॥

भगदत्रः॥ पादुमसुवगुलत्रिः॥

भगदत्रः॥ पादुमसुवगुलत्रिः॥

भगदत्रः॥ पादुमसुवगुलत्रिः॥

भगदत्रः॥ पादुमसुवगुलत्रिः॥



८३ / २ - ४ - ९३ ८ =

ययपेभयगडइयनं पगिक्किः॥  
मटेमडइ, यडमोगखनगदवैवडाः॥ (८४)  
यययभंयगे रेवृ, भजडइभदभगः॥  
कैरि कैरि <sup>मूद</sup> मूद भूभुगखनं रुत्रिनं उव॥ (८५)  
दयनंयवुडैयमुडइ कुभु दिपभुगः॥  
उभगे रिडि पलैमुमकि ठिमुभलैभुग॥ (८६)  
यययभंयगे रेवृगपडू यैगसपडिभै॥  
कैभिसु मि किपः मऊः कैभिसुमंभुग  
पगे॥ ८३॥ रेवीयडू पुदगैमुडइंउंउं  
पुसकभः॥ मपि रेवीउडमुनि मभू ८  
मू लिमडि क॥ ८७॥

लीलयैवशीर्षि <sup>रि</sup> मुं निरुणमभु भुवदि  
 श्री॥ मनायभुनन रवी, भुयभन  
 भादिठिः॥५०॥ भुमेमभु रवेध,  
 मभु हभु <sup>रि</sup> ममी॥ मेथिरुमेय  
 उमटे, रवेव वन के ममी॥५०॥ रि  
 यमभु मभु वने ववे द्रुमनः॥  
 निमभु भु मेयं भु यवभुनन भुपि  
 के॥५१॥ उणवभु भु भुगलः म  
 उमदभुमः॥ यययभुयभु रिठिठि  
 थलभिय भु मेः ५३॥ रि = जं॥



८७ - ३ - ७ - ७ - ३

नमयन्ते, भाग ७ देवी मङ्गलं  
द्विः॥ अवाययतपद न ७:  
मङ्गलं मुखपते॥ ५८॥ मङ्गलं मुख  
उच्चैव तै, उच्चैव मुख मङ्गलं मुखे॥  
देवी दिमुलेन, गङ्गा मङ्गलं  
व धिः॥ ५५॥ अङ्गलं दिमुलेन  
उच्चै, निरुत्तम मङ्गलं मुख॥ ५३  
य मङ्गलं मुख ७० मङ्गलं मुखे  
७०॥ ५०॥ अङ्गलं मुख मङ्गलं मुख  
७०॥ ५०॥ अङ्गलं मुख मङ्गलं मुख  
७०॥ ५०॥ अङ्गलं मुख मङ्गलं मुख

विपे विर निपडन, गम्य कृष्टमग, <sup>५३</sup>  
 वेभसुके सिद्धिणि, भुभलेन वमंदडः  
 के नि निपडिड कुभे डि ड मुलेन व  
 कसि॥ निगुगः मगे यन, कडावै  
 इ ७ रिगे॥ ५ ७॥ मैलानुक रि ॥  
 पू ७ मभव प्रिरु मगयः॥ के थं ७७  
 सिद्धादव भिन्न, भिन्न गीवाभुषण  
 मिगं मिपेउग ट्रे धभट्टे भट्टे विणगिः  
 विभिन्न एण्ड भूपा यंडु रुं भदभुं  
~~मकुव ड~~ सिमा ७ के मि कृष्ट विण  
 कडाः॥

मकुव ड  
 मकुव ड



५० / से. ५० - ७० दि =

मिने पिण्डे मिमि, पडिः पत्रु  
मिः॥ ७॥ कवन्नायववन्नेव,  
मदीः पमवण॥ नर उमप  
उइवन्ने कु दलय निः॥ क  
वन्ने मिमिः पममकु वि  
पा० यः॥ डिपु डिपु डि रु यत्रे,  
रवीमन्नेमदमः॥ ७॥ पा डि  
उगवनागामै, भुगैवमन्ने॥  
मगभुमाठइइ, यइकुमद  
२०॥ ७॥





५०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ उष्टुमुत्तमदशकत्रिभुक्तुं स्तुतं मित्रं  
भक्तिकं॥ गुरुलिपुपयैर्गणाय वटं नी,  
विष्टुभलीति वग्मा॥ दधुक्कुरण्डी रि  
त्रिद्विलभसुक्ता विद्वसियं॥ स्तुवी  
वदुदितं सुगुप्तभुक्तं, वदुसभक्तमि  
त्ता॥ ॐ नमस्तु भि कुरुगवटै नमः॥  
ॐ उष्टुविद्वत्त॥ ०॥ ॐ त्रिद्वत्तुभक्तं  
उष्टुत्तमवल्लभदशः॥ मेरुनी  
मुक्तुर्कैयपुष्टुयैदुभक्त, भिक्तभा॥  
मस्तुवीमावद्ये॥ ववद्युसभक्तमः॥  
यवभक्तमिः मस्तुत्तयवद्ये॥ ॐ  
यस्तु॥ ३॥

[illegible]



[illegible]

५१७

३-१०-८३१-३३-

उ० वेगाडुभुट्ट, निपटस थुका नि॥ ८०५,  
का थुका ॥ मिमभुभाभु निठ कडभा॥  
उमगसु ॥ ८०६, मिल वका नि ठि दूडः॥  
र उभुधुडले नैव कगलसु निप डिडः॥ ८०७  
८०८ वीरुमुगल थुडु मुल्लय भाभसु मुडभा॥  
वकुलं ठि थुय लेन, व ८०९ मुभुडव नुकभा॥  
उमभुभुगवी दंस, उववस भद्र दनुभा॥  
दिनेदंस दिमु लेन, रा थान थ भ मुगी॥ ८१०  
विमलभुभिन काय दडय भाभ वै मि॥  
रमुं वमुपं ८११, मिग विट्ट यभकयभा॥

नि



एवंमस्त्रीयमन्त्रे उभयैर्भदि यथाः॥

भदि यथा भुपय, इमयमभसत नृणां॥

कश्चि उभयपुत्राय, प्राक्कैयं भुयथा॥

लङ्गुलानि उभयैर्भुजैर्हंसविरुग्निना॥

वे वेगानं कश्चि भुयथा, नृणां भुयथा॥

निःसुभः भवत नृणां दयमाभसतु ल॥

प्रियाट भुयानीक, भुयथा भुयथा॥

भिनं दत्तं भुयथा, केषं भुयथा भुयथा॥

भेयि यथा भुयथा, प्राक्कैयं भुयथा॥

भुयथा भुयथा, भुयथा भुयथा॥

वेगहन विष्णु भद्रोऽमु विनीदः॥ ८५  
 लक्ष्मि लक्ष्मि दः सुविः प्रवयामभभवः॥  
 यः सुवि विहित सुयः प्रवयामभभवः॥  
 सुभजिलभुः मः निपे उः रुमेः लः॥ ८६  
 उः उः उः उः उः उः उः उः उः उः॥ ८७  
 सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः॥ ८८  
 सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः॥ ८९  
 सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः॥ ९०  
 सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः॥ ९१  
 सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः॥ ९२  
 सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः॥ ९३  
 सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः॥ ९४  
 सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः॥ ९५  
 सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः॥ ९६  
 सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः॥ ९७  
 सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः॥ ९८  
 सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः॥ ९९  
 सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः सुभुः॥ १००



५६ ३० ३० ३० ३०

उवाच सुपुत्रं मे वीरि कुरु भय कैः॥  
 उपसृष्टं मम भद्रं ततः मे कुरु मदा गणः॥  
 को मम भद्रं सिद्धं, उच्यते कथं गणतः॥  
 कथं उच्यते मे वीरि, यन्मम भद्रं कुरु॥ ३९॥  
 ततः भद्रं मे कुरु, मम भद्रं कुरु, मम भद्रं॥  
 उच्यते कुरु यमम, ततः मे भद्रं कुरु॥  
 ततः कुरु मम भद्रं, मम भद्रं कुरु॥  
 यथे पुनः पुनः मुद्रं मे वद मम भद्रं॥  
 ननु मम भद्रं मे वद, तलवीद मम भद्रं॥  
 विभक्तं मम भद्रं, मम भद्रं कुरु॥  
 एतन्मम भद्रं॥ ३५॥

ममता विदितं मुनेः लवती मने  
 के॥ ३६ ॥ उवाच संभवे मुने भाय रण  
 कल कर्मा॥ ३७ ॥ श्री कृष्णाय॥ ३७ ॥  
 गल गल कं भूः भय वदिव  
 धूम॥ यद्विदितं शैव गति पृष्टु  
 देवः॥ ३८ ॥ दधिक वय॥ ३९ ॥  
 स्वभक्त्या यमदृष्ट भूः संभक्त भूमा॥  
 धर्मैरुत्कृष्टं कुरु मुने नैव भद्र कुरुते॥  
 उतः मे पि यत्नं कुरु भूय निरुभाय  
 उतः॥ मरुति पुत्रावति रुरु वीदे ॥  
 मंच उतः॥ ४० ॥



४११

सं. सु. ३ - ३ -

मठ निष्कृतावर्गभे, यष्टमने भद्रभाः॥  
उद्यमदभिन रेवृ, निः शिष्ट विप  
डिडः॥ ८१॥ डे द द द सं, रेवृ  
मैटंनन मिडभा॥ पूद दं पामं रम,  
भक ल रेवड ग ७॥ ८३॥ उ धुव  
मुं भा रे वी, मठ रे वृ म द विठिः॥  
ए गुत रूव प ड ये, न रे सु पू ग ७॥  
(८८॥ मि ड डि मी म ड रे व पा ले भा  
व लि के म न तु रे रे वी भा डु महा  
म नु य ए भा न मु क म ॥ ३३

वि कालकृत्तं करणैः वि कुल कृत्त  
 मं, भै लितसु म्गोपि ॥ मन्त्रं मन्त्रं कृत्त  
 म्, वि मिमन्त्रि कर्तुं कृत्त वि नेने ॥  
 मि द भुक्त वि कुम्भं वि कुवन्त, वि यत्तं  
 एव यत्तं वि कुम्भं ॥ एव यत्तं एव यत्तं  
 वि मन्त्रं वि कुम्भं मेव यत्तं वि कुम्भं ॥  
 वि नमः श्री कृष्णाय ॥ एव यत्तं  
 व ॥ ० ॥ वि कृष्णायः भाग्य वि द  
 उ वि द ॥ उ वि द ॥ उ वि द ॥ उ वि द ॥  
 व ॥ ० ॥ उ वि द ॥ उ वि द ॥ उ वि द ॥



५९ / २ - ५ - (८) - ३ =

व मि पूज्य पुलकै नमः ॥ १ ॥  
नैव यथाऽभि सं रणगुरु मसु ॥ नि  
मेष नैव गमसि मभुद भुद ॥ २ ॥ भि  
कमपिल नैव मद धि पुं ॥ ३ ॥ न  
भवि न उ मुठ नि भ न ॥ ४ ॥ यमु  
पुठ व भ उ लं रुग व न तु ॥ ५ ॥ दगु  
न दि व कु म लं व लं य ॥ ६ ॥ भि क  
॥ पिल रु ग द धि पाल न य ॥ ७ ॥ मय  
मुठ ल मु म डिं कौ ॥ ८ ॥ यमी  
मयं भु डि नं रु व न पु ल रु ॥ ९ ॥ य  
इ नं रु डि यं रु म य भु व डि ॥ १० ॥

मृगुभटं कुलरात्र, पूरवष्ट लं ॥  
 उं डं नः मृयति पालयते वि विमुभा ॥  
 किं वल यमउवकुपम, मि वृमडड ॥  
 किं यति वीदम, मा कृय कति कुति ॥  
 किं यद वेध यति नितव, कुत वि ॥  
 भवेधु रं वृभा रं वग, मि के ध ॥  
 के उभमभु रं गं दिष्टु मि रं वै ॥  
 कुल यमे दति दग, मि विर, पु पा ॥  
 भव मृय पिल मि रं रं गं, मु कुड ॥  
 म, वृ वृट दि यम भूति मुभ, वृ ॥



५७ / सं . कु - - इ - - हि - - ॥

वष्टमममुभगु भम रं न न ॥ वष्टि पू  
क डि भक लेषु भविषु रं वि ॥ भू द  
मि वै पिदुग ॥ भूम वष्टि द उ ॥ रुद्र  
मे द भु र व र नै भू य ॥ ३ ॥ यम कि  
के र, विमिदु भद वुडु भू द क मे भु नि  
य डे भ्रिय ड डु भगै ॥ भे क भ्रि ठि भु नि  
ठि ग भु म भु रं वै ॥ विदु मि क ठा व डी  
प ग भ डि रं वि ॥ ७ ॥ म वू भ्रि क भु वि  
भल लु रु पं नि ठ न ॥ भू की प ग भु प रु  
प ० वं र भ भ्र भ ॥ रं वी दि यी ठा  
व डी ठ व ठ व न य ॥ व डु मि भ व र ग डं  
प ग भ डि द डी ॥

भणमि रं वि वि मि ड पिल स भु भाग ॥  
 न न भि न न ठ व भ ग न व भ न्न ॥ श्री  
 कै ट ठ डि ह र यै क कृ ड पि व भ ॥  
 गे गी ड ने व भ मि ने लि कृ ड पू डि धु ॥ ०० ॥  
 उ ध ड् ड म भ म लं थ डि प ल म न्न ॥ १  
 भ न क डि क न कै उ भ क डि क उ भ ॥  
 मृ ट मु डं पू ह ड म उ न ध ड ठ पि ॥ वं  
 वि ले क म न म भ दि य भो ॥ ०१ ॥  
 मृ धु पि रं वि कृ पि डं रू कृ टी क ग ल ॥  
 भृ ट् म म क म न म म कृ वि य व भ ह ॥  
 पू उ म भे सं भ दि पु म म् गी व भि डं ॥  
 कै ली व डे दि कृ पि ड उ क म न्न न ॥ ०३ ॥



ॐ विष्णुमन्त्रं कवरी कवय ॥ भट्टविना  
 मय डि के पवरी कल नि ॥ विष्णु उभय  
 य नैव मभयम् सुमे उत्री इतलं मविपुल  
 भदिय सुगु ॥ ०८ ॥ उभय उ एव प रे पुठ  
 न नि उयं ॥ उयं य यं मि नमसी म डि वरु  
 वनः ॥ उभयप विरुडु म एव उम ॥  
 ययं मरु डु म कवरी पुभवः ॥ ०५ ॥ वि  
 यमु नि ॥ ॐ विमक ल नि मरुव कम् ॥  
 उ उ मरुडः पु डि नि न मरु ती कौ डि ॥  
 मने पुय डि उ उ कवरी पुम म ल्ले क  
 उ य पि ल ल नि नरु उ नम वि ॥ ०७ ॥ वि

नि न न भूत दगीम, वी डिम, मेय ए त्रु ॥ भूत  
 भूत भ डिम वी व मुठं म म मि ॥ म डि म नः  
 य रु य द रि ॥ क ड म टः ॥ भवे प का का  
 य म य म मि त्रु ॥ ०१ ॥ म डि द डै म न  
 म ये ट भु यं ड व डै ॥ ऊ व तु न भ न ग का य मि  
 य थ थ म ॥ म म म म म म मि ग म मि वं पू या  
 त्रु ॥ भू डि डि त्रु म मि डि डि डि मि मि मि ॥ ०३  
 म पू व किं न रु व डी पू को डि रु म ॥ भ व  
 म म न रि थु य दू डि मि पि म म म ॥ लै क  
 थु या तु मि थु वे पि डि म म म ॥ ०४ म मि  
 व डि डै थु डि डै थु म मी ॥ ०५ डि - ३०



पद्मपूठपूक विभू <sup>ॐ</sup> सुखैर्गै॥ मुल  
 गक त्रि त्रिव <sup>ॐ</sup> नम <sup>ॐ</sup> मे भग ७भा॥ यत्र  
 गड विलयभंसुभूमि त्रुपभु॥ ये शृणुते  
 उव विलेक यतं उरु उड॥ १०॥ न वड उरु  
 मभनं उव रु वि मी ले॥ उयं उरु उरु वि मि  
 उभ उलुभ टैः॥ वीदं य द नृक उरु वय  
 ग कृभ ७॥ वै वि यु पि पूक रि उरु य  
 इये कुभा॥ १०॥ के नै यम रुव डि उरु य  
 रुभम॥ उयं य मरु रु य क द डि द रि  
 रुइ॥ मि उरु य मभा नि युगं य रुभू॥  
 इये वरु वि वरु रुव नै य ये पि॥ ११॥ -

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 यः प्रपद्यते भगवत्पदं ॥ २ ॥  
 भगवत्पदं प्रपद्यते ॥ ३ ॥  
 भगवत्पदं प्रपद्यते ॥ ४ ॥  
 भगवत्पदं प्रपद्यते ॥ ५ ॥  
 भगवत्पदं प्रपद्यते ॥ ६ ॥  
 भगवत्पदं प्रपद्यते ॥ ७ ॥  
 भगवत्पदं प्रपद्यते ॥ ८ ॥  
 भगवत्पदं प्रपद्यते ॥ ९ ॥  
 भगवत्पदं प्रपद्यते ॥ १० ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कथं लुप्तमस्मीति ज्ञेयम् ॥ ११ ॥

सिद्धिद्वय ॥ १३ ॥ सर्वभूतार्थे शिवः

कृष्णमैत्रयेणैः ॥ १० ॥ कृष्णमैत्रयेणैः ॥ १० ॥

मित्रैः उपैसु प्रसिद्धम्, प्रथितं पूर्य पूर्यम्

सुभाषी समस्तु नमः ॥ ३० ॥ श्री गुरु

कम॥ ३०॥ वृषां दिग्मः भवेयम्

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३९ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३९ ॥

रुगवट्टदुःभवं न किं हि दुःखमिष्टम् ॥ ३८ ॥

वस्यं त्रिदः मङ्गलं कंभलि य भाः॥ ३५॥  
यसि व पि वोर्य भूय भू कंभलि सुनि॥ ३५॥

यसिक् पि कोरुय भूय भूकं भूकं सुमि॥ ६॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

हिं सं भूत सं भूत इति हिं भीषः॥ परम परः  
 वसुभट्टवैरै हिं भुं भुं भुट्टमलाने॥ ३८॥  
 इति विरु विरु विरु विरु वैरु राना हिं भय  
 रभा॥ वरु ये भूत भव इति वरु भव  
 भिके॥ ३९॥ एति वरु॥ ४०॥ इति  
 भक्ति रं वैरु गति रं इति वरु॥ इति वरु  
 वरु कली वरु वरु दिता वरु॥ ४१॥ इति  
 इति विरु प भूत भय वरु॥ रं वी  
 रं वरु गति रं राना इति विरु॥ ४२॥  
 भन भूत गति रं वरु भन भूत वरु॥ ४३॥  
 वरु वरु वरु रं इति भन भूत भूतः॥  
 वरु वरु वरु रं रं वरु भय वरु॥  
 इति वरु भय वरु वरु वरु वरु॥ ४४॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय





[illegible]



59 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमः पूजयेत्तु यै नित्यतः पूजतः भगवतः ॥

गुरुयै नमो नित्ययै गौदे उद्ध नमो नमः ॥

हृदयै नमः श्रुतिपुत्रैः भगवतः नमः ॥

कलहै पूजयेत्तु यै भगवतः नमो नमः ॥

नैवैकुङ्कुलं लक्ष्मणवै नमो नमः ॥

नमः नमो नमः नमः नमः नमः नमः ॥

पुष्टिद्वयै नमः पूजयेत्तु यै भगवतः नमः ॥ ०१ ॥

भगवतः नमो नमः नमः नमः नमः नमः ॥

नमो नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥

सि यस्वीभवकुडधुविष्णुयडिमविः॥

नममुमु<sup>(०८)</sup>, नममुमु<sup>(०५)</sup>, नममुमु<sup>(००)</sup>, नम नमः॥

सि यस्वीभवकुडधुसुनटकिपीयड॥

सिनममुमु<sup>०१</sup>, नमः ०३, नम, ००॥

सि यस्वी. वद्विउयेनमं भिः॥ नममुमु,

१०, नमः, १०, नमः, ११, नम नमः॥

सि यस्वी. निमुउयेन, नममुमु, १३॥

नम, १८, नम, १५, नम नमः॥

सि यस्वी. सुठउयेन, १०॥ नममुमु<sup>(११)</sup>,

नमः १३, नम, १०, नम नमः॥ सि



३३ / ३. ३. ५० - ३ - ३

यस्वी. कयकुपेय. नममुष्टे. ३.

नमै नमः ॥ ३८ ॥ - नममुष्टे. नममु. नममु. ३०-३९-३३

यस्वी. मकिकुपेय. ३५. ॥ नममुष्टे.

नममुष्टे. ३३. नममुष्टे. ३३. नमै नमः ॥ ३९ ॥

यस्वी. कयकुपेय. ३. नममुष्टे. ८.

यस्वी. मकिकुपेय. ८०. नममुष्टे. ३.

यस्वी. मकिकुपेय. ८१. नममुष्टे. ३॥ ८९, ८३, ८८ ॥

नमै नमः ॥ ८९ ॥ यस्वी. लयकुपेय. ८३-८७-८८

नममुष्टे. ५०, नम. १०-१२- नमै नमः ॥

यन्मन्त्री मन्त्रियुक्तः नमस्तुते ॥

यद्वी. मूत्रपुत्र. जममुत्र. १३

यन्त्री. क३.॥

यन्त्री. लक्ष्मी. ५१, ५३, ५८

य रे वी. कृति उपम. ५, ११, १२, -

यन्त्रवी. भु. ३. ४. १३, १४, १५ =

ਧਰਮੀ ਮਧ ॥ ੨੦, ੨੧, ੨੩ ॥

दादवी. ३ प्रि. ॥ २२, २५, २७,

ਯਸੇਵੀ. ਭਾਉ. ॥ ਨਮ ਮੁਖੁ =

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २१, २३, २६ ॥



५८ अ. सु. ५ — ६ —

वि ७ श्रिय ७ म, वि पूरी कुट नम, यि ले धय ॥

कुट धम ३३ सुवृष्टे नम नमः ॥ ३० ॥

मि डि कुप ॥ या क इ म ड सुष्टु मि ड र ग ड ॥

नम सुष्टु ३०, नम म सुष्टु ३१, नम सुष्टु ३३ ॥

वि मुट मः प्रव म, वी पु मं मूया ॥ इय मः

सु ॥ मि ने ध मे वि ड ॥ को उ म नः मरु

द उ गी मुगी ॥ मरु निरु मू ट कि द उ

या य नः ॥ ३१ ॥ या म मू डं मे कुट मूट

रे पि ड ॥ र मू कि गी म मि मू ग ड म मू ड ॥

या म मू ड ड ड ॥ मे व द (उ नः ॥ म व थ

रे क कि वि न मू म वि डि ॥ ३५ ॥ वि

विष्णु विसृज्य ॥ वि

एवं भुवः विष्णु नं, नै व नं उरु धवरी ॥<sup>(३५)</sup>

भउम, हृ य यो उ य र द्र वृ ७५ न ॥

न वृ वी ड मृ म हृ रु व ह्रिः भू य ड इ क ॥<sup>(३६)</sup>

मृ गी कें म ड मृ भूः म भू रु ड वृ वी भि व ॥

मृ य व जी भृ ह ग र ड नि न ड मि व न भ म म य  
य व जी भृ गी व र ड ॥

भू ३ उ र भ म उ र ड य ड भ भू र ड नि ग र ड उः ॥<sup>(३७)</sup>

नै वः म भ मूः म भ ग, नि भू मू न धा रि डः ॥

म गी र कें म द व ड, निः मू ड य ड भू भि क ॥

य ड भूः नि मू ड भि क <sup>(३८)</sup>

कें मि की डि म भ मू य ड डै लै कें य गी य ड ॥





विद्य निगू निमल्ये गरुमासी निवै थुठे ॥  
 इलेहे उमभ पु निमल्ये थुठे ॥ १०१ ॥  
 मगवः भम नीडे गरुमा पुठुगु ॥  
 य गरुमा पुठुगु यं डे वे मुः भुव द यः ॥ १०२ ॥  
 विमानं दं भमं युकु मेड डि थु डि डे मु ने ॥  
 गुडुड भिद नीडं यम सी मु ठ मे मु भा ॥ १०३ ॥  
 निणिधम द यमः भम नीडे ठ ने मुगु ॥  
 किडू किनीर मे य विडुल भभुन थ  
 कुरभा ॥ १०४ ॥ कुरं डे वरु भं गे द क डुन  
 भु वि डि थु डि ॥ उव यं मुठुन वगेयः पुग सी  
 दूर थडे ॥ १०५ ॥



५/ - स - ३ - - ३ - - ३ -

संभारद्वय - संवत्सरी न विमल ॥ १॥

महेश, इति मन्त्रम मंत्रि मन्त्रय दृष्ट ॥

यमः मलिलर मन्त्रय दृष्टय ॥ १॥

निमन्त्रय विमल मन्त्रय दृष्टय ॥ १॥

वदितु, पिर मन्त्रय दृष्टय ॥ १॥

एवं मन्त्रय दृष्टय निमन्त्रय दृष्टय ॥ १॥

श्रीगुरुभक्त कलानी, इत्यक मन्त्रय दृष्टय ॥

॥ सित विमल ॥ १॥

निमन्त्रय विमल मन्त्रय दृष्टय ॥ १॥

प्रेयस मन्त्रय दृष्टय निमन्त्रय दृष्टय ॥ १॥

॥ ३ ॥ इति मन्त्रय दृष्टय निमन्त्रय दृष्टय ॥ १॥

यस्य गन्तु इति मन्त्रय दृष्टय निमन्त्रय दृष्टय ॥ १॥

५५ / २ - ३० - ५५ - १२

भद्रगङ्गाय नमः ॥ १ ॥  
शंकराचार्यः पूज्यः ॥ २ ॥

॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥

॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥

॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥



कीर्तिमयनेमुंडदयानुभासाः॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

यत्रिमृद्विभुवपुगनुवपुगधुस॥ २००३)

गङ्गा कुङ्कुम कुङ्कुम निर निमष्टव मेरुने॥

भूगङ्गां तं वि ले क म ह म क व य म ॥

मादुम मागुपगमुयउगुडु वयम॥

ॐ वा भगवते नमः ॥ निमग्नमस्तु विरुभम् ॥

कण्डूमासुलाय भिगइकुम भिव यडः॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

57-2. ३५ - (५५) — ३३ —

ॐ उदङ्गुभासुतु वीगभीगुतः भिङ्गु  
गुताकावगीरुमययं उदङ्गुभासुतु (३३)

ॐ श्री ॐ वृषभा ॥ ३००० ॥

भट्टभङ्गुदयनरु भिष्टु किङ्गुदयनरुभा ॥

ॐ लैरापिपिदिः भङ्गुभिमभुमु भिङ्गुदयनरुभा ॥ ३००१ ॥

किङ्गुदयनरु भिष्टु किङ्गुदयनरुभा ॥

भुयभल्यवभिष्टुदयनरुभा ॥ ३०१० ॥

येभं रायति भङ्गुमेयेभं रुदयनरुभा ॥

येभं पुष्टिलै लैकेभं रुदयनरुभा ॥ ३०११ ॥

ॐ भङ्गुगमुदयनरु भिष्टु भङ्गुभासुतु ॥

भं रुदयनरु किं भिष्टु रुदयनरुभा ॥ ३०१२ ॥

लभ्ये ॥



रि कउउवा यः रि ०९८

रि मवलि भुमि मै वंडं वृद्धि रूवि मभा  
गुः॥ इलै कः पुमं भिपु रूग्ने मुमुनि  
मुमुयेः॥ ०९५॥ अट्टे यमपि रूट्टे नं भवे

रू वगवय ॥ ०९६॥ डि पु डि मभुपि रू वि किं  
पुनः श्रीरू मे कि क॥ ०९७॥ उ मृष्टः सक

ल रू व मुमुट्टे धं नमभुपि॥ मभुम्पी  
नं कयंडे धं श्री पूया मृ (मि मभुपयम)॥ ०९८

माट्टंग मुभयै वै ऊ य मं मुमुनि मभुये॥

के म कध॥ निउउगो व म गमि पु मि॥ ०९९

रि श्री रू वृवा यः रि उरुभा॥ ०९९

गमि पु पि \*

53/ 5-3-12 - 115 -

हि स्वमेउदुली भर्मे निभर्मेमु इविद  
 वना॥ किंको मि पुइल्लमयमनलेमि  
 रुयुग॥ ०५०॥ मडंगमुमयै वैकुंठय  
 मेउदुवमडुलिउः॥ उदयमु मरुमु  
 यमयमुकंकोउयड॥ ०५०॥ —  
 उडिमीरेवीभळमुमुउभवः मे नम  
 पंडुमेपु वः मं पल्लम (ममापुम) =  
 रुमु॥ मक्कु कु पुरा न मवल्लिकेम  
 नुडो० भवमकु ल भळली कुकुमभा॥  
 मिमिदमु ममि वेयरभा कड पूपुम  
 उ डिडुलैः॥ मंमु मंमु मंमु मंमु  
 नै इ मिळिः मेहिळै॥



59 — 5 — 1

विभक्तान् न दाककम् ॥ १ ॥ कृतीक  
॥ ३ ॥ पर ॥ विभक्तान् न दाककम् ॥ १ ॥ कृतीक  
उ नै ग्ने लभक्तान् ल ॥ ० ॥ विभक्तान्  
सक्त क र्गवट्टनमः विट्टि विट्टि ॥ १ ॥  
विट्टि कल्लवये नैवः सपुट्टि मधु पुरि  
३ ॥ मभक्तान् न दाककम् ॥ १ ॥ कृतीक  
३ ॥ १ ॥ उभक्तान् न दाककम् ॥ १ ॥ कृतीक  
३ ॥ मभक्तान् न दाककम् ॥ १ ॥ कृतीक  
उभक्तान् न दाककम् ॥ १ ॥ कृतीक  
मभक्तान् न दाककम् ॥ १ ॥ कृतीक  
उभक्तान् न दाककम् ॥ १ ॥ कृतीक  
मभक्तान् न दाककम् ॥ १ ॥ कृतीक

१ - ५ - ६ -

सुभक्तान् न दाकन् ॥ १ ॥ सुभक्ति

॥ ३ ॥ पर ॥ विभक्तान् न दाकन् ॥ ४ ॥

ایشیامیں پاؤں پھیلا نے کے لئے روس مصوبے

ایران کی طرح چنوریا میں بھی اتنے کہ نہ ان کے لئے

॥ ५ ॥ सुभक्तान् न दाकन् ॥ ६ ॥ सुभक्ति

सुभक्तान् न दाकन् ॥ ७ ॥ सुभक्ति

सुभक्तान् न दाकन् ॥ ८ ॥ सुभक्ति

सुभक्तान् न दाकन् ॥ ९ ॥ सुभक्ति





71 / ५० ३० — ५० — ३०  
सिंहभिरु व ०९॥ <sup>किं</sup>मिं <sup>३०</sup>ठ वडु भभी  
प्रभलेमनः॥ ५३३॥ <sup>३०</sup>कं <sup>३०</sup>रुभमय  
काग भिकउः॥ ०३॥ सुव रूमुं भद स  
टंभभगं उरु भिक॥ ५व दन य के श्री  
॥ सुव म कि पाँ मुठैः॥ ०४॥ ३० सुभ  
राः के य हू ह न रं भुव व म॥ ५५८  
माभ न यं सि द रू वृः भुव द न॥ २०५॥  
कं सि द उ पू द न॥ ३० <sup>३०</sup>ह न भ न य प र॥  
सु रू वृ रू पां उ ह दू प न भ भ द भभी॥ २०६॥  
के यं सि द उ य भ भ न यैः के पु नि के भ गी॥  
उ व उ ल पू द न॥ ३० <sup>३०</sup>सिं भि द उ व दू स का॥  
(०७)



विष्णुवदु मिग्मः कृत्स्नः स्वयं ॥  
यथा कृत्स्नं कथं कथं पत्र के माः ॥  
कृत्स्नं नम्रं लंभं कथं तीं भद्रं न ॥  
उत्तरे मणिं कृत्स्नं वदनेन डि के पि न ॥  
मृदु मणिं कृत्स्नं निदं प्रभु लंभं ॥  
वलं कथं कथं कृत्स्नं की मणिं ॥  
मृत् पत्रं पत्रं पत्रं मणिं प्रभु मणिं ॥  
मृत् पत्रं मणिं मणिं मणिं मणिं ॥  
देव मणिं मणिं मणिं मणिं पत्रं ॥  
गम्यं गम्यं गम्यं मणिं मणिं ॥

कै मे पु कृष्ट व सु व य रि व सं म ये रु ति ॥  
~~८७३॥~~ मे य वृ ठैः स वै र प गैः वि नि द ट्ट भा ॥  
~~उरु~~ उ भुं द ट्ट वं रु धू यं मि द र वि नि य  
डि डै ॥ मी थू म ग भुं डं व सु ग डी ड ट्ट  
भ व रु भि क भा ॥ ७ ८ ॥ ८ ९ श्री भ क डी  
व पु ग ल भ व लि कै भ व रु र व रु भ क डुं  
मं पु ल ग ॥ रु म ॥ १० ॥ ति ट्ट वं वं ग ड  
पी णि मु क क ल य णि डं म ड डी मु भ  
ल डी ॥ ट्ट मु क डिं मु भो र म मि  
म क ल णं व ल की व रु य डी भ ॥



कल्लवमलत्रियमिडविल्लममुल्लि  
 कं गजवभुं॥ भड्डी मल्लपडं मपुम  
 विवमं मिडकै म मिठलम॥ १ नमः  
 मल्लिकठगवटं नमः ट पिठक ॥ ० ॥

मुल्लपुमैडै मट्टमुमभु पोगमः॥

मउगुवले पेट ययगुदुडामुठः॥ १ ॥

मममुमैडै मवीभी पडुमं वृवभुम॥

मिडमै पमि मै लेदुमम मडडिकडुने॥

मैडुमं मम मउमममं मकुकुडुडः॥

मुडपुमप मिठामुवटै मभीपगाः॥

मःकै मं मकै मू, मिडकड नगी मूडि॥

कै पनमपुवरु नं मभीवल्लम, मुडम॥





॥ कं रंगदे के मे पु ग्रीवय भव्य य पुभा ॥

पदेन कृष्णवर्णमैत्रये दयः ॥ ०३ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

भाष्येन सांग्द कृपामुसने भविताट्टिपि॥३॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

भमरु कवमुष्टा नष्टं मुष्टा कवमुष्टा १८॥

अभिनिन्दतः के सिद्धे सिद्धिदुम्भितः॥

॥ गुरु नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गर्वद्वन्द्वीम हीनकीर्तिभाः॥ कर

यममयैः सुमहत्सिधुभूदभूमः॥०१॥

१३ / २०७ : ८१ — १६

उत्तम कृत् नेष्टन कति विमल न निद्रु  
पभा॥ वक्र दक्षक विभुनि सवद्रुनि यने  
रुग्भा॥ ०३॥ उँ ए दम डि क धा की मं कै  
वन मिनी॥ कली कग लवङ्ग उडुङ्ग  
वमने डुलः॥ ०७॥ उडु यम मल मिं  
दं रुवी य डु मणवड॥ १॥ कीट्ट म पु के मं  
मिग्भुन मि न मि नड॥ १०॥ मय म डुं छि  
रुग्भुनं रुग्भुनं नि य डिडभा॥ उमृपुय  
यमुर्भे यडु छि दं रुय॥ १०॥ दम मेधं  
उडुः मेटं रुग्भुनं नि य डिडभा॥ मडुं  
मममल वीदं मि मे रुँ रु यडुडः॥

(११)



[illegible]

पिनगणीमुविभूतं कश्चिद्विदुः संभुदुः

वली ॥ कश्चिद्विदुः कश्चिद्विदुः कश्चिद्विदुः

मुभिः ॥ मलकभुक्तपालनीएकं

ममूतमेलिपं ॥ भवस्तेमुनिवकनि

लकं पद्मवतीं विदुः ॥ विनमस्ते

कश्चिद्विदुः ॥ विदुः कश्चिद्विदुः ॥ ० ॥ विदुः कश्चिद्विदुः

कश्चिद्विदुः ॥ विदुः कश्चिद्विदुः ॥ विदुः कश्चिद्विदुः

भैरवपुत्रविदुः ॥ १ ॥ विदुः कश्चिद्विदुः

पीनयः ॥ भवः पुत्रपुत्र ॥ ३ ॥ विदुः कश्चिद्विदुः

टनं विदुः कश्चिद्विदुः ॥ ३ ॥ विदुः कश्चिद्विदुः

वलीः विदुः कश्चिद्विदुः ॥ ३ ॥ विदुः कश्चिद्विदुः

ममूतमेलिपं ॥ भवस्तेमुनिवकनि



किंकि कीद लिप्यस्तु स र भा उं कुल नि  
मं मां कुल नि प्रभु उं निम सुत म भा <sup>२५</sup> य ॥  
क ल क रं ह र भै वृ क ल क य सु व य ॥  
भा य सु य म सु नि द त उ गि रं उ म भा <sup>२६</sup> य ॥  
उ ट ल्लु पृ भा य डि मु भै क र व स भ नः ॥ नि  
ल ग भ भ द म र भ भ द म र भ भ द भि व दः ॥ १ ॥  
मु य उं म डि क र भु र भै र भ भि व य म भा ॥  
हृ भ नै प्र य भ भ न भै ग ग न भ भ ॥ ३ ॥  
उं भि द भ द न र भ भि व क र व क र प ॥ २ ॥  
भ भ भु नै न भ भ भं म डि क र भं व द य ॥  
भ भ भि द भ भ नं न र भ भि व भ भ ॥  
नि न रं भि य भैः क ली र भि भि भु भि न ॥ <sup>२०</sup>

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ श्री भगवत्पुत्राय नमः ॥

ॐ श्री भगवत्पुत्राय नमः ॥

ॐ श्री भगवत्पुत्राय नमः ॥

ॐ श्री भगवत्पुत्राय नमः ॥

ॐ श्री भगवत्पुत्राय नमः ॥

ॐ श्री भगवत्पुत्राय नमः ॥

ॐ श्री भगवत्पुत्राय नमः ॥

ॐ श्री भगवत्पुत्राय नमः ॥

ॐ श्री भगवत्पुत्राय नमः ॥

ॐ श्री भगवत्पुत्राय नमः ॥

ॐ श्री भगवत्पुत्राय नमः ॥

ॐ श्री भगवत्पुत्राय नमः ॥



इके भगी नहि द भुसभ भुवा द न॥

पेम्बनहृ यये रैट नृ प्रिक पुदु पि ॥

उद्येववैष्णवीम किनरुपमिं भ्रुवा॥

मन्विशकगम मन्वि पद्मकमुद्रपायये ॥

एतद्वगदभउतंतुपं य विहोउदोः॥

मक्तिः सप्तययै उइवाग दिं विहृशीडनम॥

नमो भिंदीर भिंदरु विहूगीभनसंवपुः॥

पुपुडमठ के पक्षि पुनः मंदिरः ॥

वन्द्य दभु? वैवे श्री गणेशाय नमः ॥

५५ भक्तनयन यक्षाम्भुर्वैवम् ॥

ॐः परिकल्पितो मातृवत्तुः ॥

दृष्टान्तभूमाः श्री प्रमथप्रीतदस्यिक





योनिवर्कैरेतेनयमेवमिवःसुयभा॥  
 मिवमृगीडिलेकेभिंभुग्भृष्टादिभंगड॥<sup>७३७</sup>  
 उपिमुद्गावमेमृष्टःमिवपुष्टंभदभुगः॥  
 सुभद्वपुष्टिगणमदरकट्टयनीभिः॥<sup>७३७</sup>  
 उःपुवभभेवगरेममकिष्टियष्टिः॥  
 ववद्वरुष्टभद्वभुंरवीभभगवयः॥<sup>७३७</sup>  
 ममगद्यदिष्टवकुलमरुंपाद्वयन॥  
 मिष्टुलीलयवर्गैःपुनर्मृष्टमदीमु  
 दिष्टः॥ ३०॥ उष्टयभुःकलीमुलपाद्वि  
 ररिष्टा॥ पष्टुपेयिष्टमृगीकवरी  
 विष्टुष्ट॥ ३१॥ कभकुलरुलकेपदः  
 वीष्टुष्टिष्टा॥ वृष्टुलीमकीमुष्ट  
 वृष्टुष्टिष्टा॥ वृष्टुलीमकीमुष्ट  
 वृष्टुष्टिष्टा॥ वृष्टुलीमकीमुष्ट

हिमच सुमीरिभुलेनडवमरु वैधुवी॥  
 मेटादू पानकेभागीडव मुकुडिके  
 पिडा॥३॥ मेन्नीकुलिमपातेन मा  
 मेरेरुनवः॥ येउचिमगिः॥५॥  
 रुठिप्यभूवधः॥३५॥ उरुपूदग  
 विपुभु संधुमृकडवकमः॥ वगद  
 भुट्टपाडमुकु वैधुविमगिः॥३५॥  
 नापैविमगिः मुट्टाकुयतीभद  
 भुगव॥ नगभिंदी मगाएन म  
 अगिडिमुन॥ हिपुल्लमिगुग॥





हि कुलिमेन ढाड्यु सुवदु मभुवसे लिउमा ॥ मभु  
 उभुभुउयेण भुभुप भुदग रुभा ॥ ८३ ॥ यवतः ५३  
 उभुभु मगीर मूक विरुवः ॥ उवतः पुनप रण्डा  
 भुभुद वल विरुभा ॥ ८४ ॥ उभुपिययपभुदपु  
 धी क विरुभा ॥ भनंभाउ हिदुगं मभु पाडा ३  
 की पभाभा ॥ ८५ ॥ पुनभुवदु पभाउ नकडमभुमि  
 रेयभा ॥ ववदुगं पुनप भुउ रण्डा ॥ मदभुमः ॥  
 वैधुवीमभा येनंभुके ७ हि र प नद ॥ गरुय  
 उठयभा येमी उभुभु मभा ॥ ८६ ॥ वैधुवीम  
 हित्रभुग पिभुव मभुव ॥ मदभुमे रगदुपु  
 उभुभु मदभुमः ॥ ८७ ॥ मदु र प न के भागीव  
 रुदीमडय भिन ॥ मदी मगी दिकुलनगु की रं  
 मदभुमः ॥ ८८ ॥



[illegible]

ॐ भायन क ली र गृह गुरु वी र भृ मे नि उमा ॥

ॐ भावतु यः नमस्तु यस्तु वसिष्ठः ॥५७॥

नमः भूवर्णनमः के गम ५३ द्धिक भुपि ॥ उमृदउमृ

महानुवदसभूवमे (मि) ॥ ५३॥ यडभुभुभुभु<sup>म</sup>

समस्तस्य यन्त्र ३॥ भाष्ये भवन्त्यायम् गुरुः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

उभयमेव लिख्यते ॥ मन्त्रीकुलेन वष्टुन वष्टुन

निधिद्विधिः ॥७०॥ राधाकृष्णसंज्ञं यमकु

भीत में लगी रही॥ मध्याह्नकी पूरु मसूरमंड मंग

दा: १०॥ नीरुभदी पलरुनी मेमदाभुः॥

गमयन् भडलभवपुत्रिणमचय ॥ ७१ ॥ दंडमि

महाराज ननु भद्रं भवति ॥ ७३ ॥ ७३ श्रीभक्त

यथाज्ञानं भावितुं कर्मसु रूपांश्चैव भवन्ति यः प्रभुमीश्वरी



نہی

— 3 —

2

विवृक्ककाशुन निरं रुमिगुत्तम ले ॥ य म  
 इकु मे स वां निरु वदु रु मुः ॥ विदु म भिदु  
 मकल रु अं रिन इ भुत्त भिक्के म भानि मे  
 वपुग म्य भि ॥ वि स भि क रुग वट्ट नमः ॥

(॥ गणेशाय नमः ॥ ० )

ॐ विष्णुमिहं ममः ॥ १ ॥  
 मे वृद्धिगिभादं गुरुवीरवण मित्रा ॥  
 कुयमेकभृदं मे गुरुवीरवण मित्रा ॥  
 कुयमेकभृदं मे गुरुवीरवण मित्रा ॥  
 सकाभमेयकेभनिभृदमु ॥ ३ ॥  
 निधिरुव ॥ ४ ॥ सकाकेयभडलं गुरुवीर  
 निधिरुव ॥ ५ ॥ ममभृदमु ॥ ६ ॥

दृष्टमनेभद सेंटं विलेष्टमध भद्र दन॥  
 अह एव त्रिभुवनं यथापृथग् भगसेनको  
 उष्टुगुडमुखा ५ पुं ५ सुयसु भद्राभा॥  
 भद्र पुं ५ पुः ५ सुगुर्वी दनु भुपा ययुः॥  
 सुगुगामभद्रावीदः भुमे ५ भुवले काः॥  
 निद्रुं य भि कं के थ हृ ह यं य भद्राहिः॥  
 मे य भुभरी वारी भु वृ भु भु भु भु भु यः॥  
 भु भु त्रिभुभुयः मावध भरी वीगु मे य य ५  
 वव द्रुः ॥ १॥ मि भु भु भु भु भु भु भु भु भु  
 कभ मरु भुः ॥ इ भु य मा भ य भु भु  
 मभु य भु भु भु भु ॥ ००॥ = ३ = ॥





उ३ः पा सु द भुं सु भा य तुं रै ट पु म् व भा ॥  
 सु द ट रै वी त ॐ पौ पा उ या उ उ ले ॥ ७० ॥  
 उ मि त्रि य टि उ कु र्ने त्रि मु र्ने सी म वि कु र्ने ॥  
 इ उ द डी व म् कू र्ने पु य ये द तु म् ॥ ७१ ॥  
 भा व भु भु य द मु न्नी उ पा म य ॐ ॥ ७२ ॥  
 कु र्ने पु चि उ ले वृ थु म् यं न र्ने य ये ॥  
 उ म् य तुं म् म ले क रै वी म् कू भ व मु य ॥ ७३ ॥  
 इ म् वुं म् पि ण व म् कू ग डी व मु म् द म् ॥  
 उ ग य म् म क कू र्ने त्रि म् य ॐ म् नै न म् ॥ ७४ ॥  
 म् म भु रै ट म् नै ट नं उ र्ने व वि ण यि न ॥



७१० ५ - ३ - (७) — ३ —

तिउभिं दे भद्र क रै भृष्टि ठ भद्र भृष्टिः॥

प्राय भग्न गगनं गं उ वैव हि मे म॥ १०॥

उः कली भद्र गगन क भद्र क य उ॥ ११॥

का हं उ त्रि न रै न पू द्वा भृष्टि रै दि दः॥

य उ कू द भ मि वं भि व द्वा गी य का द॥ १२॥

उः म वृ ग्भ र भृष्टिः कें पं थं य यो॥ १३॥

गगं भृष्टि भृष्टि भृष्टि भृष्टि भृष्टि भृष्टि॥

उर र ये द हि दि उं रै व र क स भ भृष्टिः॥

भृष्टि न ग द य म कि भृष्टि कू ल डि वी य उ॥

भृष्टि जी व दि कू र्ण भृष्टि भृष्टि भृष्टि लू य॥

भिन्दन रन भभभृवृपुं लेक शियं उभा ॥  
 निरुद्धः भिः भिः भिः भिः भिः भिः भिः भिः ॥ ११ ॥  
 भभभृवृपुं लेक शियं उभा ॥  
 भिः भिः भिः भिः भिः भिः भिः भिः ॥ १२ ॥  
 उः भभभृवृपुं लेक शियं उभा ॥  
 भभभृवृपुं लेक शियं उभा ॥ १३ ॥  
 उः भभभृवृपुं लेक शियं उभा ॥  
 भभभृवृपुं लेक शियं उभा ॥  
 भभभृवृपुं लेक शियं उभा ॥  
 भभभृवृपुं लेक शियं उभा ॥





ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ममं मुं कली मिवदुडीः यथा ॥

कैभगी मङ्गि निरुवा: कलम उम  
नरु मभउ थउ नउ ये नवृ भदभुत: निरुवा

॥ देवमुनीरिमुलेन विवा. पउउम ॥ २३०  
॥ मागरीउभुभाउनेकेसिमूलीकृडाऊवि॥

॥ यं तु यं मम कुरु वरुणं मम वरुणं ॥  
 वरुणं मम कुरु वरुणं मम वरुणं ॥

कै अष्टि न मुग्धा का यत्र  
रुक्ति मु धे क ली भिव रुती भगपि यै

रुक्मिण्युक्ते कलानि (१०) उद्दिष्टीभक्त



रि ३ बुधदभरु मिंग विमभूव द्वि॥ नेइं ०  
 नः मायडं दुमकभय माना॥ गधैः कु ह  
 मूरुण्डी भिवम क्रि कुं॥ कभे सुंगी ह मि  
 रुम भिपुडं मुले पामा॥ रि ३ डि हाना॥  
 रि नभमी मिडि क ठावट॥ ट पि रु व य॥ ॥  
 रि निभं नि दं पयु रुडं ॥ मभ  
 भा॥ दृभ नं वलं यै व भः रु रु वी व  
 य॥ ३॥ रु ल व ले पाद्यु रुं भ रु ने ग व  
 भ व द॥ मृभं व ल भ मि ह पृ पृ मे य  
 रु नी॥ ३॥ रि मी रु वृ व य॥ ॥ रि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अमुं नमः प्रमथेव विमर्शमहि कुडयः ॥५॥

उत्तमभुक्तं वै वै बुद्धं श्री भूमाय लयमा

उभयपक्षों के बीच केवली उद्योगिक

निमीरेवृषा ॥ १ ॥ अहं वि कुटु बद्धि

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५०॥ ना वधे मित्रैः मर्त्ये भुवा  
दृष्टं यत्तु द्रुमकुट्टयभने

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ०॥  
मुमुक्षुः कुरु ॥ इत्येदं कुरु कुरु यत्तु  
लेखक्यम् ॥ ०॥





उभयपार्श्वमुपसृज्य शिखरे रय शिखरं ॥  
उभयपार्श्वः मिदं तु न मृगयति कामलभा ॥  
दत्तमुपसृज्य रयः शिखरे उभय विभागे विः ॥  
रुद्रदभसूतं यो नमस्कृत्य निजं मुखं नि  
जं हृत् ॥ ७३ ॥ शिखरपदमुपसृज्य निजं  
हृत् ॥ ७४ ॥ उभयपार्श्वं हि उभयं नमस्कृत्य  
गवता ॥ ७५ ॥ उभयपार्श्वं नमस्कृत्य रयं  
हृत्पुनः ॥ ७६ ॥ उभयपार्श्वं नमस्कृत्य रयं  
हृत्पुनः ॥ ७७ ॥ उभयपार्श्वं नमस्कृत्य रयं  
हृत्पुनः ॥ ७८ ॥ उभयपार्श्वं नमस्कृत्य रयं  
हृत्पुनः ॥ ७९ ॥



[illegible]

मलयककलं प्रसीम विही पं मम न  
 रमा ॥ ११ ॥ ३३: प्रसन्नम, यिलं कउउमि  
 मगम नि ॥ रगडुभुमरी वानी वसति  
 मलं ररुवत्ररु: ॥ १३ ॥ उदउमं यमेलक  
 ये प्रगमं मुं ममं वय: ॥ मतिउम नवदि  
 टमुमिं मुद नि यतिउ ॥ १५ ॥ उउं र वग  
 लमवे दध नि रुम नम: ॥ रुकुयति  
 कउउ मिं गम व ललिउं रय: ॥ १७ ॥  
 मव रयं मुखै वट रु उमु भूग  
 ल: ॥ वव: यट: मुख का: मधुके रुदि  
 वकर: ॥ ३० ॥



ॐ नमः शिवायः ॥ ३३ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमः शिवायः ॥ ३३ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमः शिवायः ॥ ३३ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
ॐ नमः शिवायः ॥ ३३ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

भवत्तु विक्रमः ॥ १ ॥ विद्विधयत्र वि  
द्विधयत्र ॥ धूमि रूभात्तुगते, यिलसु ॥ धूमि वि  
मेसुगिधदिविस्व ॥ इमेसुगी रूविस्वगमासु ॥ *ही वि ॥*  
विस्वगमासु ॥ मदीसुतु येयः ॥  
मि ॥ अयं सुतुपु सुतुयद्वयद्वय ॥ सुतुयद्वयद्वय  
सुतु वीद ॥ ८ ॥ इव सुतुवी मक्ति, ननु वीद ॥ विस्व  
वी रं यममिभाय ॥ संभेदिं रू विममसुमे सुतु  
धूमत्र सुविभक्तिद्वयः ॥ ५ ॥ विद्वः ममसुसुव रूवि  
रू ॥ सुतुयममसुः मकलं रूगमा ॥ इवैकया परि  
उम, सुमवं ॥ कतु उतिः सुतुयपयं ॥ १ ॥ भवत्तु  
यम रूवी सुतुयमक्तिधूमि ॥ इमुतुसुतुयकव  
रुवत्तुयमं सुतुयः ॥ १ ॥ भवत्तु सुतुय ॥ सुतुय  
संभुति ॥ सुतुययन रू रूवि *विस्वगमासु मं सुतुय*



ॐ कलाकपूरि उय<sup>११</sup>यति उमविण विनि॥ विमृष्टपा  
ॐ मऊ **ॐ नमो यमि नमो भुते** ॥ ७० ॥ ॐ भवमकूलम  
कूलं विवेकवकुसुमिकं॥ माहं दूषकं **ॐ नमो यमि** ॥ ७१ ॥  
ॐ भुष्टिभुष्टि विनामानं देउकु उमनाउते॥ ग<sup>११</sup>मूये  
गु<sup>११</sup>भये **ॐ नमो यमि नमो भुते** ॥ ७२ ॥ ॐ मा<sup>११</sup>गउलीनउतु यति  
दू<sup>११</sup>भयय<sup>११</sup>॥ भवभुष्टिदरेरुवि **ॐ नमो यमि** ॥ ७३ ॥  
ॐ दंभयकुविभानमु॥ वृद्ध<sup>११</sup>लीउयणरिणि॥ के<sup>११</sup>मभुः  
भुष्टिके<sup>११</sup>रुवि **ॐ नमो यमि नमो भुते** ॥ ७४ ॥ ॐ दिभु  
ल<sup>११</sup>भुष्टिभुष्टिभदवधरुवदिनि॥ भ<sup>११</sup>देमृगीभुष्टिप<sup>११</sup>  
**ॐ नमो यमि** ॥ ७५ ॥ ॐ भ<sup>११</sup>प्राकृकुलवउभदभक्तिण  
नये॥ के<sup>११</sup>भगीउयसंभुने **ॐ नमो यमि** ॥ ७६ ॥ ॐ ग<sup>११</sup>दी  
उ<sup>११</sup>भदभुष्टिभुष्टिभुष्टिभुष्टि॥ वगदउपि<sup>११</sup>भिव  
**ॐ नमो यमि** ॥ ७७ ॥





विष्णु ल कालमद्गुणमेषां भगवन्महा॥ विष्णु लं  
पाउने छीउ ठमूक लि नमो भगवते॥ १५॥ वि विन भि रू  
होउं भि भुनेन पद व रंग॥ साय ४० पाउने रू  
वि भये छैनः भुनिव॥ १६॥ वि भुमा भुमा भ पक  
र निभुको रू लः॥ भुताय भुता ठवउ र भि के  
हं न वयमा॥ १७॥ वि रोगान् मेधान् पदं भि उभू॥  
पुष्प भि क भान् क लान् रीपूना॥ इभ, भिउने न वि  
यत्रा ॥ इभ, भिउ ह मयान् पूक ॥ १८॥ वि  
रू रू यद्वरु नंदय हृण्म विप रू विभद भु ॥  
भा॥ उपरु न कै व ह ण्डु भुति, रू व भि के रू रू गति  
क ह॥ १९॥ वि वि ह भुमा भुपु विवेक रीप॥ भु ह  
भु व ह भु क ह रू ह॥ भम ह गउ विभद रू क॥ वि ह  
भ य भु रू रू वि वि भुमा॥ २०॥ वि = = = ॐ = ॥

७१  
 ॐ कं भि यदेगु विधमुनग, यद्गवे रुधुवला  
 नि यइ॥ रुवानले मइउव विभट्टे, इइ भिउंठं यति  
 थ भि विमुभा॥ ३०॥ विमु सुभिउं थ भि थ भि विमुं, वि  
 मु भि क णग्यभी डि विमुभा॥ विमु मवमु रुवरी रु  
 व डि, विमु मय ये इय रु कि नभूः॥ ३३॥ रु वि भूभी  
 रु थ भि थ ल यने डि ठीउ, विउं थ व भगव रु पुनैव  
 भट्टः॥ थ थ निभव रुगं भूमं नय मु, रु इउ थ  
 क रु निउं मुभ ठे थ भनन॥ ३४॥ पू रु नं थूभी  
 रु इं रु वि विमु डि ठ भि लि॥ इ ले रु व भि रु भी हु  
 ले क नं व रु रु व॥ ३५॥ **ॐ श्री रु व रु ॥ ३६॥**  
 रु व रु रु रु ग रु वां य मु न भी थि रु भ॥ उं व रु पं  
 पू य मु भि रु ग रु भू य क रु क रु ॥ ३७॥ **ॐ श्री रु व रु ॥**  
 रु भ व रु रु भूम नं इ ले रु रु थि ले मु भि॥ रु व भैव  
 इ य क रु द भू भू रु रु रु न रु भू ॥ ३८॥ **ॐ श्री रु व रु ॥**



नि नैव भुङ्क्ते भुङ्क्ते विंशति यगं भुङ्क्ते निभु  
 भुङ्क्ते वृद्ध भुङ्क्ते भुङ्क्ते ॥ ८० ॥ ननु गेयं कुरु  
 कुरु मे कुरु गुरु भुङ्क्ते ॥ उभे न म भिष्टु भिष्टु  
 म ल निव भिनी ॥ ८१ ॥ यनुष्टुतिं कुरु ॥ उभे  
 ५ विवीडले / भवतीद दनिष्टु भिष्टु यनुष्टु  
 कुरु वनी ॥ ८३ ॥ गुरु यनुष्टु कुरु गुरु यनुष्टु  
 कुरु भुङ्क्ते ॥ गुरु कुरु विष्टुति कुरु भिनी कुरु  
 भुङ्क्ते ॥ ८८ ॥ उभे कुरु वनी भुङ्क्ते भुङ्क्ते कुरु  
 भुङ्क्ते ॥ भुङ्क्ते कुरु विष्टुति भुङ्क्ते कुरु कुरु  
 कुरु भुङ्क्ते कुरु भुङ्क्ते भुङ्क्ते भुङ्क्ते ॥ भुङ्क्ते  
 कुरु भुङ्क्ते भुङ्क्ते भुङ्क्ते भुङ्क्ते ॥ ८९ ॥ भुङ्क्ते  
 कुरु भुङ्क्ते भुङ्क्ते भुङ्क्ते भुङ्क्ते ॥ ९० ॥ भुङ्क्ते  
 कुरु भुङ्क्ते भुङ्क्ते भुङ्क्ते भुङ्क्ते ॥ ९१ ॥ भुङ्क्ते

ॐ उँ उँ उँ ॥ यिले ले कन ॥ ३ ॥ द मभमूवे ॥ ४ ॥  
 ॐ भिभगः म कैर, व पुः पू ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ६ ॥ ॐ  
 ॐ म कभुगी ॥ विष्टुं उँ उँ य भुष्टुं कु वि ॥ ७ ॥ इव  
 व ॐ भिभगः म भुष्टुं म भुष्टुं ॥ ८ ॥ ॐ  
 वी ॥ विष्टुं उँ उँ न भुष्टुं ॥ ९ ॥ ॐ  
 ॐ उँ उँ उँ ॥ १० ॥ ॐ  
 ॐ भिभगः म भुष्टुं ॥ ११ ॥ ॐ  
 ॐ भिभगः म भुष्टुं ॥ १२ ॥ ॐ  
 ॐ भिभगः म भुष्टुं ॥ १३ ॥ ॐ  
 ॐ भिभगः म भुष्टुं ॥ १४ ॥ ॐ  
 ॐ भिभगः म भुष्टुं ॥ १५ ॥ ॐ



७३ = १३ = १०० =  
 हि इमं गीतिमं लोकं पुनः पुनः विभवतः ॥ हि  
 उं यम यम वरुण न वेङ्गु रु विष्टु डी ॥ य ॥  
 उरु उरु वरीदं कं करिष्टुष्टु रिभल्लयभा ॥ ५५ ॥  
 हि ॥ डि मीमांसा तु यपुत्रा न आवल्लिके म  
 ननु मीमांसी म दत्तु ॥ ५०० ॥ मरिउं  
 ममल्लम ममापुम मुरुम ममा - हि ॥

हि अथः कुरु ममादत्तु = ॥  
 हि विष्टुष्टु मम प्रुं भुगयति भुक्त भुक्तं की  
 य ॥ कट्टा हिः काव ल विट विलममु  
 मु हि र मे विष्टुष्टु ॥ द भुष्टुष्टु गम मिहि  
 विट विष्टुष्टु वि मायं य पं गु ॥ इह नं ॥  
 विष्टुष्टु भुष्टु ल विष्टुष्टु ममिष्टुष्टु रुष्टुष्टु रि न  
 इं रुष्टुष्टु ॥

२ / ३ - हि. (२) ६

नि नमः शुद्धि क रण प डि ति नि बु व मा ॥ ७०

पठिः भुवै शुभं निटं भुष्टे यः सभ दिडः ॥ ८९

उभु दं भक लं व ठं न म पिष्टुष्टु सं म य मा ॥

भपु कै ट ठ न सं सभ दि य भु न म न मा ॥ ९३

कीड पिष्टु डि ये उ वृ वृ ठं भ भ नि भ भु ये ॥

मष्टुष्टु व स उ उ मृ न व भु व क स ड स ॥ ९८

मैष्टु डि स व ये ठ हृ भ म भ द हृ भु ड म ॥

न ड यं व भुं कि डि भुष्टु उ न स थ रु ॥ ठ वि

ष्टु डि न रु डि मृ न स व भु वि ये स न मा ॥ ५॥

मै शुष्टु उ न ठ यं उ भु रुष्टु व न र स डः ॥ न म

भु न ल उ ये थ रु डि भुं ठ विष्टु डि ॥ ७॥

उ भु न म उ म द हृ प डि उ वृ भ म दि डः ॥ मैष्टुं

स भ रु ठ हृ थं भुष्टु य नं भु ड ड ॥ १॥ डि



उपमनानमेयं सुभदमगी मभुसुवना ॥

उखरिविठमसुं भदं सुमयै मम ॥ ३ ॥

वैरुदुपिउ मभुसुवना यनै मम ॥ मरुनउदिमै

कृमिभानि एउउ मभुसुवना ॥ ७ ॥ वलिपूठने

परवभुषिकदे भदं सुव ॥ सवै ममउ मरुसु

सुगिभसुदं सुवमेवव ॥ ८ ॥ ययुयका

दे ॥ १० ॥ एनर एनरवपिवलिं परंउख

कृमा ॥ श्रीकिधुभुदं पूटावकि देमंउख

कृमा ॥ १० ॥ मरुकुलेभद परसुवउ यय

वधिके ॥ ३ ॥ ममउम दं सुसूठ रुकिममवि

३ ॥ ०९ ॥ भववठ विनिमुके एन एउममवि

३ ॥ मरुभुमदुभरुन रुविधुडिनमं मयः ॥ ०३ ॥

सूठ ममउ मरुसुवना सुवउयः सुठः ॥ परसुमं य

यहै सुवयउ निठेयः पुमना ॥ ०८ ॥ २ ॥ ३ ॥

विधि धवः भद्रुयं क वि क लानं यैयपहुड ॥  
 नरुडै कुलं यं संभा कहुं भम सु ४ उभा ॥ ०५  
 मैर्मु वि कम्भ भवड उ व रु सुप्र रु जने ॥  
 गूदपी रु यं गू म भ कहुं सु ४ माक्रम ॥ ०६  
 उयभानः मंय विगूदपी रु य रु रु ॥  
 रुः मयं य रु वि रु पं सु मयं सु य रु यड ॥ ०७  
 बलगूद वि कु उ नं वलनं म वि क र कभा ॥  
 भा उ रु रु पि रु उं मैरी ग भ उभा ॥ ०८  
 रुवुड न भ, मे य उं वलन वि कां पभा ॥  
 रुके कु उ पि मा रु नं य ० न रु व न मनभा ॥ ०९  
 मवं भमै उ रु कहुं भम स वि रु क र कभा ॥ १०  
 यधु रु प्र य सु ग रु डी य सु व उभा ॥ १०  
 विधु उं रु रु नै रु म पु रु ली वै रु क वि मभा ॥  
 रुवु सु वि वि रु रु ग पु रु नै व रु रु य ॥ १० ॥ वि



श्रीतिमैस्त्रियेऽममिभक्तं सुश्रुतिं पूत॥

पूतं काठियथानिउवः गेष्टं पूयमुति॥ ११॥

गुरुं कोटि कुते ह्ये मितं कीउनेभम॥ यद्वे

पुयगिं यमे मे पूरुं टनिवद्ध मभा॥ १३॥

उमिद्रुते वै गिरुं रुयं पंभं नम यते॥ यधु कि

मुमुते यमु यमु वृद्ध धिः कृतः॥ १८॥ =

वृद्ध उमरुत यमु पूयमुतु मुठं मडिभा॥

मगरे पूते वपि रु वपिय विव गिते॥ १५॥

मधु चिवकतः मुते गरीते वपि कुरुतिः॥

मिद वृष्ण नवते व वने व वन कमुतिः॥

गुरु कुरु नम लुपु वष्टे वरु गते पिव॥

उप्र लिते व वते नमुतः पेते मक लवे॥ १२॥

पगुव पि ममु पुममु म कुरु म रु ल॥ भव

वठ मपे गमु वेरु न ह विते पिव॥ १३॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
पूज्यं विन्दन्तु मूर्ध्वैर्वै ॥ २ ॥  
सर्वं यत्पल यत्तु भगवंतं विन्दन्तु मम ॥ ३ ॥  
८ पितृ व ॥ ३ ॥ ३ ॥ भगवती च  
क यं विरूपाः ॥ ४ ॥ भगवन्तं वन्दन्तु  
उगी यत् ॥ ५ ॥ ३ ॥ विरूपाः भगवती  
कग वत्पुत्र ॥ ६ ॥ भगवन्तं वन्दन्तु  
विन्दन्तु यः ॥ ७ ॥ ३ ॥ भगवन्तं वन्दन्तु  
वैरि यत्पुत्र ॥ ८ ॥ भगवन्तं वन्दन्तु  
उल विरूपाः ॥ ९ ॥ ३ ॥ भगवन्तं वन्दन्तु  
पुत्र लभन्तु यः ॥ १० ॥ भगवन्तं वन्दन्तु  
पुत्रः पुत्रः ॥ ११ ॥ ३ ॥ भगवन्तं वन्दन्तु  
पाल नमः ॥ १२ ॥ ३ ॥ भगवन्तं वन्दन्तु  
मुयत् ॥ १३ ॥



१५/२-१३-१०९

भय मिदय विल्लनं उधु ट डिं भूयमुडि ॥  
वृपुं उयै उधु क लं वृद्धं भुं भनरं सु ॥ ३२ ॥  
सिभन क लृभन क ले भन भगी भुपय ॥  
मैव क ली भन भगी मैव भु धि उवटण ॥ ३३ ॥  
भुडिं क रै डि कुडनं मैव क ली भन डनी ॥ ठव  
क ली नं ॐ मैवल लुगी वडिः पूरु गदे ॥ ३४ ॥  
मैव ठवे डख ल लुगी विन मये प र व डे ॥  
मुन भभु रि उ प र्थ व प ग डु कि डि भुव ॥ ३५ ॥  
भिरु डि प र विडं य भ डि उधु भुव मुठ भ ॥  
उडि मी भ कु डे व प र ल भ भ व लि क (३६)  
भन उ र र वी भ द डु डु र म डु म डि उ  
मुं ल भ ॥ मु छ भ भ क म व न व भ ल  
मु ठ डु भ ॥ भ व भ न ल भे न ल भि व  
भ व डि भ न के ॥ मु विः ॥ (३७)

विबल कुमकुल कसं सउव दुरिले नभा॥  
 यमकुमे मां प्रपं गायत्री मिवं ठले॥ ५  
 ममनभु कायक रं॥ गिदले मरुणरी दि  
 ने इभा॥ मभुरी भाउ पि गं॥ यमवरी  
 यमभायी नमभि॥ **वि नमसु दिक रुगवट्टे॥**  
**विठपिठ वर॥ ०॥** एउउ कविं कुप रवी भ  
 दादुभउमभा॥ एवं भूठवाभ रवी ययै रउ  
 रंगडा॥ १॥ विहृउयै वियउ ठगवदि भूभाय  
 य॥ उयदुमेव वै मृमुउवै कट्टे विवि किनः॥ ३॥  
 मे दू ते मेदि उम्व मेदं मे धृति यथा॥ उभयदि  
 भद ररा कु सं यम मगीभा॥ ८॥ मुग पिठ मेव  
 नुं ठेग भन थवनर॥ ५॥ **भक दु गउवमो**  
 उ डिउभुवमः मूड मूड भावः रुदियदठः॥ १॥



पू लियटमद रुगं भु पिं सं मिउ वृत्ता ॥ नि वि  
 ॥ डिममै हन गृह्य पदाल नम ॥ ३ ॥ एगभम  
 ह सुपमे मय वैमै भ द भने ॥ भ रुज न ऊ भु भु वा  
 नमी पुलि नम भुः ॥ ७ ॥ मय वै **सुभक भन**  
**भुं पं पन ॥** ३ ॥ भि नु लि न रु ह वृ ह भुं  
 भ दी यमी मा ॥ ०० ॥ मृ द ॥ म रु उः मु भुः भु  
 प्र भुः भि उ द ॥ ॥ नि ग द गे य द ने उ म न भुं म  
 भु दि ॥ ०० ॥ म रु उ ॥ व निं सै व नि ए ग र  
 भु भु कि उ मा ॥ एवं म भु ग य उ भि उ व दै द र उ  
 नः ॥ ०१ ॥ य भि उ भु ए ग रु डी भु उ कं भु द न भु  
 क ॥ ०३ ॥ **मी रु वृ क म ॥ ०० ॥** य दू रु उ ड य  
 कु प द य म रु ल न रु न ॥ भ उ भु रु रु उ म वं य भि  
 ड भु रु रु मि व मा ॥ ०५ ॥ **मी भु क रु व रु**  
 उ व वृ भु ग रु भ वि रुं मृ ट ए म नि ॥  
 ३

मृद्वयनिरं गं दत्तमस्तु वलं वलत् ॥०१॥  
मैथिवै मृमुते वस्तुनं निविशमानमः ॥ ममेद  
मिडि प्रह्लाः मन्त्र विमृडि कउग्मा ॥०३॥ श्री  
देवी उवाच ॥ ११ ॥ भूलैर्गदे किडुपते मृगहं  
प्रभृते रुवना ॥१०॥ दृढि प्रदक्षलिउं उवग  
हं रुविप्रुडि ॥१०॥ भउमृकुयः मभृपृरा म  
देव विवभुः ॥११॥ भावल्लिके मभृम रुवा  
कुवि रुविप्रुडि ॥१३॥ वै मृवैदृय मभृवो  
मभृते रुवविभुः ॥१४॥ उं प्रयक्तु मिमं मिहं  
उवस्तुनं रुविप्रुडि ॥१५॥ भक्तु रु उवाच ॥  
७ डि मृद्वयै देवी यव कि लपि उं वमभा ॥  
वकुवाउ किउग्मा हं रुहृदृम मिप्रुडि ॥  
सवं देवु वं लवु भावः रुदिवदृः ॥  
मदस्तु मभमभा हं भावल्लिकु विवभु ॥१३॥





अवलिङ्ग विद्वानः ॥ ११ ॥ उ डि टु त्र न रि  
 के ल न प्र ल म ह म ॥ उ डि मी भा कुं रु य  
 पु म ल अवलि क म त्रु त्र मी रु वी भा क  
 रु भगवै मृ वा पु म न न म इ यै रु मे रु मः  
 म भु ल भा सु रु म सु भव रु ग डं म म  
 के म व न य म न म ॥ लि लु डी मं व ड  
 १००१ ॥ म सु व रि म धु मं ॥ न व ग डी पु  
 म रु पु मी म रु रु व ड ॥ म रु म व न म य  
 रि व रु व म ॥ रि रु त्रै ग य मि म ड ने ॥ रि डि ल य रः  
 रि डि प रै वि न प्र म यः क रु डि मि व म यः ॥ म य  
 वि न ग क रुं य व मि नूः म उ रु मिः ॥ रि म यः रि ल  
 य रः क रु न वि रि ॥ म भ व मं म म रु ग त्रै म धु मं म रुः  
 व म गी ॥ रि ल य रै न रु मृ मृः क रु मि उ न कं व रु म



ॐ सर्वभूतः लक्षणः

ॐ सुमायु म वि वि भूत सु वि

भूतः वः ॥ सु नू वः

इति वि ह भू कण्ड भू लक्ष्मी

ॐ क भू वः ॥ न वः ॥

वि भू भू ॥ वः ॥

वः ॥ १॥

॥ १॥

वभगी॥ छिन पं ७ मृ मृ मृः कृष्ट द्विउ न कं वृष्ट





کے لئے جو کچھ ہوتا ہے  
کے لئے جو کچھ ہوتا ہے

میرا نام روزنامی ہے

۵۰  
۵۰  
۵۰

۵۰  
۵۰  
۵۰

۵۰  
۵۰  
۵۰

۵۰  
۵۰  
۵۰



ادع

ما در  
ما در

لست بگویم که من بگویم

که من بگویم که من بگویم

که من بگویم که من بگویم

که من بگویم که من بگویم

که من بگویم که من بگویم

که من بگویم که من بگویم

ॐ सुनी सुभागा इति सु३ः सु३ः

भागा, धि॥ सा ना एत नि भंका

कु का३ मूल कृत भ॥ ३॥

ॐ ३ ठ व स त्ता म्मा एत स त्ता

मे धु विवा एता॥ ३, ६ का

नि भंका ३ का३ मूल कृत भ॥

(८)



[illegible]

۵۰  
 اوج  
 سرور و - مکی

Handwritten signature: *John J. ...*

۱۰۸  
در این کتاب

مقام سرور احمد علی خان

9  
 10  
 11  
 12  
 13  
 14  
 15  
 16  
 17  
 18  
 19  
 20  
 21  
 22  
 23  
 24  
 25  
 26  
 27  
 28  
 29  
 30  
 31  
 32  
 33  
 34  
 35  
 36  
 37  
 38  
 39  
 40  
 41  
 42  
 43  
 44  
 45  
 46  
 47  
 48  
 49  
 50  
 51  
 52  
 53  
 54  
 55  
 56  
 57  
 58  
 59  
 60  
 61  
 62  
 63  
 64  
 65  
 66  
 67  
 68  
 69  
 70  
 71  
 72  
 73  
 74  
 75  
 76  
 77  
 78  
 79  
 80  
 81  
 82  
 83  
 84  
 85  
 86  
 87  
 88  
 89  
 90  
 91  
 92  
 93  
 94  
 95  
 96  
 97  
 98  
 99  
 100

لکھنؤ میں مقیم ہونے کے بعد

وہی کہ وہاں سے آئے ہیں

الحمد لله الذي جعل القرآن الكريم

۲۵



آلوم

پہلی سال

۱۱

۱۲

۱۳



۱۰ صفحہ ۱۰  
زبان و سر اس کے سر سے ۱۱  
۱۲  
۱۳  
۱۴  
۱۵  
۱۶  
۱۷  
۱۸  
۱۹  
۲۰  
۲۱  
۲۲  
۲۳  
۲۴  
۲۵  
۲۶  
۲۷  
۲۸  
۲۹  
۳۰  
۳۱  
۳۲  
۳۳  
۳۴  
۳۵  
۳۶  
۳۷  
۳۸  
۳۹  
۴۰  
۴۱  
۴۲  
۴۳  
۴۴  
۴۵  
۴۶  
۴۷  
۴۸  
۴۹  
۵۰  
۵۱  
۵۲  
۵۳  
۵۴  
۵۵  
۵۶  
۵۷  
۵۸  
۵۹  
۶۰  
۶۱  
۶۲  
۶۳  
۶۴  
۶۵  
۶۶  
۶۷  
۶۸  
۶۹  
۷۰  
۷۱  
۷۲  
۷۳  
۷۴  
۷۵  
۷۶  
۷۷  
۷۸  
۷۹  
۸۰  
۸۱  
۸۲  
۸۳  
۸۴  
۸۵  
۸۶  
۸۷  
۸۸  
۸۹  
۹۰  
۹۱  
۹۲  
۹۳  
۹۴  
۹۵  
۹۶  
۹۷  
۹۸  
۹۹  
۱۰۰



लिठिलयइ

मि

लिठिलयइ विनु पशु यः कुरुति

मृयः॥ मया डि नर के सुं वा क

मृदुः

मृदुः

मृदुः

मृदुः

मृदुः

मृदुः

मृदुः

मृदुः

मृदुः

۱۰۰ صفحہ ۹  
 زیادہ تر اس کے ساتھ ہے ۱۱  
 ۱۲  
 ۱۳  
 ۱۴  
 ۱۵  
 ۱۶  
 ۱۷  
 ۱۸  
 ۱۹  
 ۲۰  
 ۲۱  
 ۲۲  
 ۲۳  
 ۲۴  
 ۲۵  
 ۲۶  
 ۲۷  
 ۲۸  
 ۲۹  
 ۳۰  
 ۳۱  
 ۳۲  
 ۳۳  
 ۳۴  
 ۳۵  
 ۳۶  
 ۳۷  
 ۳۸  
 ۳۹  
 ۴۰  
 ۴۱  
 ۴۲  
 ۴۳  
 ۴۴  
 ۴۵  
 ۴۶  
 ۴۷  
 ۴۸  
 ۴۹  
 ۵۰  
 ۵۱  
 ۵۲  
 ۵۳  
 ۵۴  
 ۵۵  
 ۵۶  
 ۵۷  
 ۵۸  
 ۵۹  
 ۶۰  
 ۶۱  
 ۶۲  
 ۶۳  
 ۶۴  
 ۶۵  
 ۶۶  
 ۶۷  
 ۶۸  
 ۶۹  
 ۷۰  
 ۷۱  
 ۷۲  
 ۷۳  
 ۷۴  
 ۷۵  
 ۷۶  
 ۷۷  
 ۷۸  
 ۷۹  
 ۸۰  
 ۸۱  
 ۸۲  
 ۸۳  
 ۸۴  
 ۸۵  
 ۸۶  
 ۸۷  
 ۸۸  
 ۸۹  
 ۹۰  
 ۹۱  
 ۹۲  
 ۹۳  
 ۹۴  
 ۹۵  
 ۹۶  
 ۹۷  
 ۹۸  
 ۹۹  
 ۱۰۰

۱۱  
برجی اودم بدلی محمد تقی  
خجکارس دلو فامریا ۱۱ سکتے

کیونکہ ہرگز کسی پورے نذرانہ نہیں ملتا ॥

کمالی طے سالاری او  
 صاحب دین محمد جوئے بزرگ  
 حسن علی بن محمد بن علی



